DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

मूल्य : 70/-

वर्ष : 02 | अंक : 15 | अगस्त 2026

शिक्षा | साहित्य | कला | संस्कृति



काव्यशैली

शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति

प्रबंध संपादक
रामश्याम 'हसीन'

संपादक
शैली भागवत 'आस'

सह-संपादक
सावित्री मलिक

कानूनी सलाहकार
अजय मिश्रा दबंग

संरक्षक
मंगल नसीम (दिल्ली)
लव कुमार प्रणय (अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)
रमेश शर्मा (चित्तौड़गढ़, राजस्थान)
संगीता अहलावत (बुलंद शहर)

सर्वाधिकार पत्रिका के स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक के पास सुरक्षित हैं।

स्वामी, प्रकाशक रामश्याम द्वारा आलम ग्राफिक्स से डिज़ाइन एवं मुद्रक कलर एज आनंद पर्वत दिल्ली से प्रिंट होकर RZ-149, मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली-83 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित कोई भी जानकारी व विचार लेखकों के अपने हैं इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
काव्यशैली पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना/समाचार/आलेख से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस सामग्री का किसी भी तरह से प्रयोग (छाया प्रति/तथ्य/सामग्रीगत) भारतीय कॉपी राइट एक्ट के तहत दण्डनीय अपराध है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र दिल्ली राज्य होगा।

काव्यशैली मासिक पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।

kavyashaily049@gmail.com | 7982407065 9425478866
https://www.sahityashreeprakashan.com/kavyashaily/

इस अंक में...

संपादकीय	शैली भागवत 'आस'	4
कविताएँ/गीत/ग़ज़ल		
शिव महिमा	कृष्णा गौतम	5
अमर शहीदों को श्रद्धांजलि	कृष्णा गौतम	5
ग़ज़ल	विकास बिंदल	5
आज़ादी की पावन बेला	अनिल ओझा	6
बहनों की राखी	डॉ. निशी मंजवानी	6
राखी आई है	उद्देश्य तिवारी 'उदय'	7
मेरे अंतर्मन का देश भक्त	पूजा सक्सेना	7
रक्षाबंधन पर ग़ज़ल	सरला मेहता	8
भाई-बहन	अलका जैन आनंदी	8
वीर जवान	राम नरेश 'उज्जवल'	8
रक्षा बंधन का त्यौहार	राम नरेश 'उज्जवल'	8
कहती है आज़ादी	राम नरेश 'उज्जवल'	9
शिव, केवल कैलाश में नहीं	डॉ. संगीता बिंदल	10
शिवमय सावन	डॉ. संगीता बिंदल	10
रक्षा बंधन (गीत)	ब्रजेंद्र शरण श्रीवास्तव	10
वो नाम एक बस शिव है	डॉ. सूर्य प्रताप राव	11
ग़ज़ल	डॉ. वासिफ़ क़ाज़ी	11
नया भारत	कर्नल डॉ. राहुल शर्मा	11
ग़ज़ल	डॉ. वासिफ़ क़ाज़ी	12
मेरा देश	संगीता अहलावत	12
ग़ज़ल	संगीता अहलावत	12
जन्माष्टमी जन्मोत्सव	भारती कुमार	13
धागे का वादा	नीतू पाराशर	13
सावन आया रे...	चित्रा शर्मा	14
राखी की डोर	डॉ. शंकर अडानी	14
शिवजी की महिमा	मित्तल टिलवा	14
राखी की डोर पुकार रही है	रेखा सिंघल	15
स्वातंत्र्य : स्वप्न से शिखर तक	डॉ. मिनल डोंगरे 'स्याही'	15
मेरे भारत की गाथा	मुकेश कुमार बिस्सा	16
माता पार्वती और भगवान शिव...	डॉ. साधना अग्रवाल	19
ग़ज़ल	कमलेश व्यास 'कमल'	19
स्वतंत्रता - गान	सुधा अरोरा	20
ग़ज़ल	हिमांशु व्यास	20
सपने देखती औरतें	वी पी दिलेन्द्र	20
ग़ज़ल	बलजीत सिंह बेनाम	21
ख़ुद को फिर से लिख रही हूँ	नैना कोहली	21
राधा-कृष्ण	भव्या	21
लेख/कहानी		
कफन में लिपटा गौरव... (कहानी)	शिखा अग्रवाल	22
देशभक्ति : नारों से कर्म तक	सारिका प्रीतम	25
हमारा प्यारा भारतवर्ष (कहानी)	किरण भंडारी	26
प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवाद...	डॉ. कृष्णा मणिश्री	27
प्रायश्चित (कहानी)	विवेकानंद विमल	29
भारतीय संस्कृति - सामासिक संस्कृति	सावित्री मलिक	34
कविताएं/गीत/ग़ज़ल		
पुरानी पीढ़ी	जगदीश शर्मा	36
ज़रा ऊँचाइयों से पहले	'रुद्राणी' पूनम शर्मा	36
वंदेमातरम	बबिता उपाध्याय	37
ऑपरेशन सिंदूर	लक्ष्मी कानोडिया	37
रक्षाबंधन	लक्ष्मी कानोडिया	37
कॉमिक श्रंखला	डॉ. दविंदर कौर होरा	38
प्रतिक्रियाएँ		39
ग़ज़ल	हरजीत सिंह 'जीत'	42
काव्यशैली सदस्यगण		42



संपादकीय

प्रिय पाठकों,

पत्रिका के इस विशेष अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष और संतोष की अनुभूति हो रही है। यह अंक मानवीय संवेदनाओं के सबसे पावन धागे—'रक्षाबंधन' और राष्ट्र-गौरव के शिखर दिवस—'15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस' के अद्भुत एवं चेतनामय संगम को समर्पित है। एक ओर जहाँ रक्षाबंधन भाई-बहन के निश्छल प्रेम की पुरातन परंपरा को रेखांकित करता है, वहीं आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसका स्वरूप और अधिक व्यापक और प्रासंगिक हुआ है। आज यह पर्व केवल एक रेशमी डोर की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिकता के इस दौर में यह आपसी सम्मान, लैंगिक समानता और एक-दूसरे के सपनों को पंख देने का जीवंत संकल्प बन चुका है। पुरातन मूल्यों की पवित्र नींव पर टिकी यह आधुनिक और प्रगतिशील सोच हमारे समाज को और अधिक सुदृढ़ बना रही है।

इसके साथ ही, इस वर्ष हमने अपने देश का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया है। 15 अगस्त का यह पावन राष्ट्रीय पर्व हमारे भीतर देशभक्ति की उस अग्नि को प्रज्वलित करता है, जो हमें स्वाधीनता के मूल्य की याद दिलाती है। राष्ट्र के इस ऐतिहासिक गौरवमयी अवसर पर हम उन सभी अमर बलिदानियों को कृतज्ञतापूर्वक याद करते हैं जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, और उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

स्नेह और राष्ट्रप्रेम के इस मणिकांचन योग पर देश के विभिन्न अंचलों से प्रबुद्ध रचनाकारों ने अपनी भावपूर्ण एवं उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ भेजी हैं। कविता, कहानी और लेखों के माध्यम से उन्होंने इस अंक को वैचारिक और काव्यात्मक समृद्धि प्रदान की है। हम हृदय की गहराइयों से अपने सभी सम्मानित रचनाकारों और सुधी पाठकों का सधन्यवाद आभार व्यक्त करते हैं, जिनके अमूल्य सहयोग ने इस अंक को एक साहित्यिक धरोहर बना दिया। आशा है, रक्षा सूत्र की मर्यादा और आज़ादी का यह उत्सव आपके हृदयों को देशप्रेम और सद्भाव से सराबोर कर देगा।

काव्यशैली के इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया अपेक्षित रहेगी।

शैली भागवत 'आस'
एडिटर

शिव महिमा

श्रद्धा के अर्पित सुमन,
ओ शहीदों अमर हो गए ।
करके आजाद अपना वतन,
जिंदगी भर को तुम सो गए ।।

माँ का आशीष तुमने लिया,
बहनों ने भी तिलक शुभ किया ।
देखकर के सजल नैनो से,
भामिनि ने विदा कर दिया ।।

तुमको लागी थी ऐसी लगन,
युद्ध भूमि को घर कह गये ।
करके आजाद अपना वतन,
इस जहाँ से जुदा हो गए ।।

शत्रुओं को निशाना बना,
उन पर गोलों की बौछार की ।
बंकरों से खदेड़ा उन्हें,
मार कर आखिरी साँस ली ।।

अपनी माटी को माथे लगा,
बीज विजयश्री का बो गए ।
करके आजाद अपना वतन,
जाने फिर तुम कहाँ खो गए ।।

फर्ज अपना अदा कर दिया,
दूध माँ का लजाया नहीं ।
लक्ष्य पर जाके धड़कन रूकी,
सिर शरम से झुकाया नहीं ।।

हम नहीं लौट फिर आएंगे,
फोन पर माँ से यूँ बात की ।
यादों में याद रखना हमें,
बेटे हम थे तुम्हारे कभी ।।

अमर शहीदों को श्रद्धांजलि

त्रिनेत्र धारी शिव शंभो,
तेरी महिमा अपरंपार ।
तुम हो अनादि तुम हो अनंत,
हे दिव्य शक्ति! शत नमस्कार ।।

तुम्हीं अजन्मा तुम अविनाशी,
नीलकंठ घट-घट वासी ।
निराकार साकार तुम्हीं,
हे कैलाशी! काशीवासी ।।

निर्विकार हो परम ब्रह्म प्रभु,
सबके पालनहार तुम्हीं ।
भोले भंडारी मदहारी,
भरते जग के भंडार तुम्हीं ।।

अगर करो तांडव नर्तन तो,
अवनि डगमग डोल उठे ।
वासुकि फन को पटक-पटक,
फूँ फूँ फूँ कर बोल उठे ।।

गंगा को धारण कर सिर पर,
गंगाधर कहलाए हो ।
चंद्रमौलि मस्तक पर शोभित,
तन पर भस्म रमाये हो ।।



कृष्णा गौतम
ग्रेटर नोएडा



ग़ज़ल

हर क़िस्म के फूलों से सजा मेरा चमन है
जी जान से प्यारा मुझे मेरा ये वतन है

हर एक जनम मैं इसी पर जान लुटाऊँ
अपने से वतन को दिया ये मेरा वचन है

चुप बैठ तमाशा नहीं देखूँगा कभी मैं
ख़ुद उसको सज़ा दूँगा जो भी करता दमन है

हर बार वो हारा है जो भी आँख दिखाए
भारत ने सदा ही किया दुश्मन का पतन है

सम्मान तिरंगे का बढ़ाने की ही ख़ातिर
अब नाम किया राज का भी लोकभवन है

ग़म तो सभी बाँटेंगे बिना वज़ह के 'बिंदल'
ख़ुशियाँ ही लुटाऊँ सदा ऐसा मेरा मन है

सम्मान तिरंगे का करे जो कोई इंसान
'बिंदल' मेरा उस शख़्स को मन से ही नमन है



विकास 'बिंदल'



आज़ादी की पावन बेला

जिन वीरों की कुर्बानी से,
हमने आजादी पाई।
नमन करें हम उन वीरों को
पावन बेला है आई॥

लाल कई भारत माता के,
हँस कर फाँसी पर झूले।
उन वीरों की कुर्बानी को,
राष्ट्र भला कैसे भूले?

ये स्वतंत्रता की बयार,
उनकी कुर्बानी थी लाई।
श्रद्धा पूर्वक नमन करें हम,
पावन बेला है आई॥

कितना जोश जुनून था उनका,
माथे बाँधा स्वयं कफ़न।
था संकल्प सभी के मन में
गोरी सत्ता करें दफ़न॥

ऐसी देशभक्ति भारत के,
युवकों में तब थी छाई।
श्रद्धा पूर्वक नमन करें हम,
पावन बेला है आई॥

भारत माँ को मुक्त कराने,
सड़कों पर उतरे गाँधी।
काँप उठी अंग्रेजी सत्ता,
देखी जो जनता आँधी॥

सत्य अहिंसा की राहें तब,
बापू ने थी अपनाई।
श्रद्धा पूर्वक नमन करें हम
पावन बेला है आई॥

बलिदानों के बीज उगे तो,
आज़ादी का तरु छाया।
अँधियारे को चीर गगन में,
नव प्रभात सूरज लाया॥

भारत माँ की संतानों के,
आनन पर खुशियाँ छाई।
श्रद्धा पूर्वक नमन करें हम,
पावन बेला है आई॥

मुक्त गगन में नित्य तिरंगा,
आज सभी फहराते हैं।
झंडा ऊँचा रहे हमारा,
गीत प्रेम से गाते हैं॥

शान रहे कायम झंडे की,
हमने भी कसमें खाई।
श्रद्धा पूर्वक नमन करें हम,
पावन बेला है आई॥



अनिल ओझा
इंदौर

बहनों की राखी

रक्षा बंधन वाले दिन,
उदासी मन में छायी थी।

भाई नहीं तो कैसी राखी,
बात हर क्षण सतायी थी।

देख मेरी रोनी सी सूरत,
आंख दीदी की भर आयी थी।

आई उठकर बोली मुझसे-
"मैं क्या कम पड़ आयी थी..?

बंधन यह तो रक्षा का है,
मैं यह फर्ज़ निभाऊंगी!..

तेरे नयन के सपने सारे,
पूरे कर दिखलाऊंगी..

आंसू एक भी निकला तेरा,
तांडव मैं कर जाउंगी...

नज़र उठी तेरी ओर बुरी जो,
काली रूप रौद्र बन जाउंगी।

ना कर मन छोटा, मेरी बहना,
एक जीवन जी कर भी,
किरदार मैं अनेक निभाऊंगी!

राखी तो मैं ही बंधवाऊंगी,
उपहार मन का दिलवाऊंगी।"

डॉ निशी मंजवानी
इंदौर, म.प्र.

राखी आई है!

रिश्तों को सजाने
चिन्ता को मिटाने
एक भेंट लेकर आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

क्यों उदास होते हो?
खामोश क्यों बैठे हो?
पत्र में प्यार समेटे आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

सूनी कलाई को भरने
तेरे माथे तिलक करने
नई सौगात लेकर आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

आँखों के मोती पोंछ लो
संकट का मुँह मोड़ लो
खुशियों के संग आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

मत समझ, खुद को अभागा
हाथ तेरे, बँधेगा धागा
हिम्मत साथ में लाई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

बुरी नज़र से बचाने
साथ तेरा निभाने
शक्ति बनकर आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

करेगी तेरी आरती
माँगेगी मंगल-गति
आशीषों से भर आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

बहती रक्तधार रोकने
घाव का दर्द सोखने
ममता की छाँव लाई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

घर से विदा किया
अलविदा नहीं किया
साँसों में बसकर आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

युद्ध के मैदान पर तू
देश का ध्वज लहरा दे तू
जीत का जश्न मनाने आई है!
बधाई हो भैया
राखी आई है।

सूनेपन को दूर कर दे
घर को फिर से पूर्ण कर दे
द्वार खड़ी थाल सजाई है!
बधाई हो भैया
तेरी बहना
राखी लेकर आई है।



उद्देश्य तिवारी 'उदय'
सतना, मध्यप्रदेश

मेरे अंतर्मन का देश भक्त

मैं सच्चा, देश का नागरिक हूँ,
भारत को स्वच्छ रखता हूँ,
फिर क्यों जहाँ भी मिल जाए जगह
वही कचरा फेंकता हूँ।

मैं सच्चा, देश का नागरिक हूँ,
भारत को धर्म समझता हूँ,
फिर क्यों हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई
सबसे बैर मैं रखता हूँ।

मैं सच्चा देश का नागरिक हूँ,
पति को भगवान और पत्नी को देवी समझता हूँ,
फिर क्यों उन्हें खाई और अग्नि में झोंकता हूँ।

मैं सच्चा देश का नागरिक हूँ,
जो बच्चों को भगवान समझता हूँ,
फिर क्यों उन्हें पढ़ाई के बोझ से
दबाकर मैं रखता हूँ।

मैं सच्चा देश का नागरिक हूँ,
जन-जन की बात समझता हूँ,
फिर क्यों थोड़े से जमीन के टुकड़े के लिए
अपनों से ही लड़ता हूँ।

मैं सच्चा देश का नागरिक हूँ,
जो राम, कृष्ण, शिव को पूजता हूँ,
फिर भी न जाने क्यों
अपने ही मन के भगवान से दूर भागता हूँ।

मैं सच्चा, देश का नागरिक हूँ,
देशभक्ति को अंतर्मन में खोजा करता हूँ।



पूजा सक्सेना
ग्वालियर मध्यप्रदेश

रक्षाबंधन पर ग़ज़ल

कह रहें रेशमी धागे बहन को तुम बुला लेना
उमर मेरी लगे भैया कि तुम यादें सजा लेना

कभी कठिनाइयाँ आएँ मुझे तुम भूल मत जाना
ज़रूरत हो कभी भी तो मुझे भैया बुला लेना

कभी हम साथ खेले थे बनाते बरफियाँ मिलकर
अकेली दूर हूँ तुम से ज़रा लड्डू बना लेना

समय पर जो न आ पाओ रखड़िया तुम बँधा लेना
मिठाई खा, भतीजी से तिलक माथे लगा लेना

कभी भी याद में मेरी बहाना तुम नहीं आँसू
समझना पास हूँ तेरे ज़रा दीपक जला लेना



सरला मेहता
इंदौर

मुक्तक

भाई-बहन

सबसे अनोखा मानते, भाईबहन का प्यार है।
रक्षा करे भाई सदा,कहते सुखी घर द्वार है ॥
संकट पड़े चाहे कभी, भाई निभाए हँस सदा।
ये पूर्णिमा के दिन पडे,बंधन बड़ा त्यौहार है॥

रोली लगा चंदन तिलक, बांधे कलाई प्यार हैं।
राखी बड़ा ये पर्व है, होता सुखी परिवार है॥
बरसात सावन मास की, गाते सुरीले गीत है।
भाभी लगे प्यारी जिन्हें,जुड़ते दिलो के तार है॥

है कामना फूले चमन,संस्कृति यही संस्कार है।
बांधे अलंकृत राखियां,भाई सुखी संसार है ॥
प्यारी मुझे बहने लगे, भैया कहे सारे जहाँ ।
कितनी दुआं करके मिली,यह ईश का उपहार है॥



अलका जैन आनंदी
दिल्ली

बाल कविताएँ

वीर जवान

बढ़े देश का जिससे मान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

सीमा की रक्षा जो करता
जाड़ा, गर्मी, वर्षा, सहता
करे निछावर अपने प्राण ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

नहीं शत्रुओं से जो डरता
पहरेदारी डटकर करता
सबका करता जो कल्याण ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

नहीं युद्ध में पीठ दिखाता
हँसते-हँसते गोली खाता
बने राष्ट्र की जो पहचान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

कष्ट हमेशा ही जो सहता
नहीं शिकायत कोई करता
होता जिसका काम महान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

नहीं कभी जो हिम्मत हारे
परहित में ही सब कुछ वारे
करे शीश का भी जो दान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

सुखमय जीवन, भय से वंचित
जिसके कारण सभी सुरक्षित
करते जिसका सब सम्मान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

जिसके दम पर देश खड़ा है
अन्यायी से सदा लड़ा है
करते जिस पर सभी गुमान ।
वह कहलाता वीर जवान ॥

रक्षा बंधन का त्यौहार

भाई और बहन का प्यार ।
रक्षा बंधन का त्योहार ॥

अक्षत चंदन रोली लाती
माथे पर फिर तिलक लगाती
थाली में दीपक भी रखती
उसे जला कर पूजा करती
रक्षा सूत्र बाँधती बहना
भैया सदा सुखी तुम रहना
दुख जीवन में कभी न आए
खुशियाँ पाएँ अपरम्पार ।
रक्षा बंधन का त्योहार ॥

राखी बँधवाता जब भाई
खाता थोड़ी बहुत मिठाई
पानी उसे पिलाती बहना
भाई कहता सदा चहकना
रक्षा बहन करूँगा हरदम
सुख के मोती दूँगा हरदम
छूता पैर बहन का अपनी
देकर छोटा-सा उपहार ।
रक्षा बंधन का त्यौहार ॥



राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ



कहती है आज़ादी

मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।
नफ़रत के मत बीज उगाओ कहती है आज़ादी ।।

वीर जवानों ने प्राणों को किया निछावर इस पर
महिलाएँ भी लड़ी देश की खातिर आगे बढ़ कर
लहू-लुहान हो गए वतन पर अपनी जान गँवाई
लड़ते-लड़ते राष्ट्र भक्त ने दिल पर गोली खाई
देशप्रेम के गीत सुनाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

एक साथ सब लडे लड़ाई बच्चे, बूढ़े मिलकर
फाँसी के झूले पर झूले देश भक्त भी हँस कर
लड़ते रहे लड़ाई हर दिन, हार कभी न मानी
जेल गए, कोड़े भी खाए, अपने सब बलिदानी
इनके आगे माथ झुकाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

सोने की चिड़िया को अंग्रेजों ने जमकर लूटा
फूलों का गुलदस्ता अपना इसीलिए था टूटा
टूटे लोगों ने जब मिलकर सारा ज़ोर लगाया
छक्के छूटे अंग्रेजों के मिल कर मार भगाया
नहीं किसी को कभी सताओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

देश चलाने की खातिर कुछ नियम बनाए पक्के
ताकी आगे चल कर अपना देश न खाए धक्के
भरे पेट भारत वासी का, रहे ना कोई भूखा
कहीं बाढ़ न आए और पड़े कहीं न सूखा
सबको सबका हक़ दिलवाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

देश द्रोह की गतिविधियों पर लगे सदा पाबंदी
रोक लगे अपराधों पर, डरें सभी आतंकी
अन्यायी को सज़ा मिले, निर्दोष निडर हो घूमें
करे तरक्की बच्चा-बच्चा आसमान को चूमें
मान और सम्मान बढ़ाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

हँसी-खुशी से रहें सभी जन, पड़े न कोई दिक्कत
सही सलामत माँ-बहनों की रहे हमेशा इज्ज़त
नई-नई तकनीकें लेकर आएँ नित विज्ञानी
देख-देख दुनिया वालों को, हो जिससे हैरानी
उन्नति की सीढ़ी चढ़ जाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।

भारत माँ की जंजीरों को मुश्किल से था काटा
छोटे-छोटे टुकड़ों में अब मुल्क ना जाए बाँटा
जाने कितने वर्ष गुलामी में थे इनके बीते
बीत गया है जीवन जख्मों को ही सीते-सीते
अश्क पोंछ कर, साथ निभाओ कहती है आज़ादी ।
मिल-जुल कर सब पर्व मनाओ कहती है आज़ादी ।।



राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ



शिव, केवल कैलाश में नहीं

कैलाश शिखर पर ही शिव का धाम नहीं,
हर निर्मल मन में उनका विश्राम कहीं ।

जहाँ प्रेम की गंगा कल-कल बहती है,
वहीं शिव चेतना मुस्काकर रहती है ।

जटाओं में जिनके गंगा की धारा है,
कंठ में विष, फिर भी जग से प्यारा है ।

जो स्वयं सहकर जग को सुख देते हैं,
वही तो महादेव कहलाते हैं ।

नृत्य उनका सृष्टि का संगीत बन जाता,
मौन उनका ज्ञान का दीप जलाता ।

जहाँ मिट जाता है अहंकार का अंधकार,
वहीं प्रकट होता है शिव का साकार ।

पत्थर की प्रतिमा में ही नहीं भगवान,
हर जीव में बसता है शिव का सम्मान ।

आओ भीतर की ज्योति जगाएँ,
शिवमय जीवन का पथ अपनाएँ ।

सत्य, प्रेम, करुणा का हो विस्तार,
हर हृदय बने शिव का सुंदर द्वार ।



डॉ. संगीता बिंदल
पुणे

शिवमय सावन

रिमझिम बरसती सावन की फुहार है,
प्रकृति में बिखरा शिव का ही प्यार है ।

पहाड़ों से बहती पतित पावनी गंगा,
शीश पर सोहे जिनके आधा चंदा ।

डमरू की डम-डम से गूंजे गगन,
भोले की भक्ति में डूबा है मन ।

भांग, धतूरा और बेल की पत्ती,
शिव को रिझाती ये निश्चल सी भक्ति ।

नीलकंठ धारी, तुम अंतर्यामी,
सृष्टि के कण-कण के तुम हो स्वामी ।

तन पर भस्म, गले नागों की माला,
तूने ही पी लिया जग का विष का प्याला।

मोह-माया के बंधनों को मिटा दो,
अपने ही चरणों में हमको बसा लो ।

सत्यम शिवम और सुंदरम का रूप हो,
अंधेरी इस राह में तुम ही तो धूप हो ।

सावन के महीने में महिमा है न्यारी,
शीश झुकाए खड़ी जनता ये सारी ।

हर-हर महादेव का लगाएँगे जयकारा,
तुमसे ही रोशन है ये जग सारा ।



डॉ. संगीता बिंदल
पुणे

गीत

रक्षा-बंधन

बाँधू मैं राखी कलाई
के जुग जुग जिएँ मेरे भाई
पावन पर्व की बधाई
के जुग जुग जिएँ मेरे भाई

आज लगें बड़े प्यारे
की बचपन में जिनसे लड़ाई
के जुग-जग ....

वो दिन नहीं मैं भूली
काँधे लगके की थी विदाई
के जुग-जग....

रहे सलामत भैया
पास आने से डरे बुराई
के जुग-जग ....

तनमन रहे तंदरुस्त
धन वैभव की हो कमाई
के जुग-जग ....

मैके जब जब आऊँ
मिले प्रेम सहित मुस्काई
के जुग जुग ....

हो जाएँ पूरी दुआएँ
"मानव" करें राम सहाई
के जुग-जग ....



ब्रजेंद्र शरण श्रीवास्तव 'मानव'
झाँसी

वो नाम एक बस शिव है

जहाँ प्रेम हो तो पत्थर भी,
शिवलिंग वो कहलाते हैं.....

गर जीवन कभी डगमगाए, शिव सहारा बन जाते हैं,
है नाम जिसका आते जुबां पर, हर दुख हर जाते हैं!
जिसके दर पे आकर, दुख खुद ब खुद हार मानते हैं,
भक्त जिसके नाम लेते यारों, बस निहाल हो जाते हैं!
वो नाम एक बस शिव है.....

अरण्य में साधक को,ध्यान में सब कुछ है मिल जाए,
भीड़ में भी तन्हा उसके मन को, जो नित चैन देते हैं!
ना सोना,ना मोती,ना सिंहासन भी जिसका श्रृंगार है,
भस्म रमाए,नंदी संग बैठे,जो सबसे न्यारा अवतार हैं!
वो नाम एक बस शिव है.....

क्रोध में भी दया जिसकी, तांडव में भी होती लय हो,
जो संहार कर के भी सृष्टि की एक नयी राह खोले हैं!
है काल से भी जो ऊपर,और समय से भी वो पार है,
जिनके नजर में होता कण-कण ब्रह्म का विस्तार हैं!
वो नाम एक बस शिव है.....

जो अपने को मिटाकर भी, खूबसूरत सृष्टि जो रचता,
है मौन रहकर भी,हर एक प्रश्न का उत्तर जो दे देते हैं!
भक्ति में जिसके कोई विधि न हो, होता बस भाव हो,
जहाँ प्रेम हो तो पत्थर भी,है शिवलिंग वो कहलाते हैं!
वो नाम एक बस शिव है.....

जिन्हें ना पुकारे कोई,फिर भी सबको आशीष देते हैं,
शून्य में यारों सबको, है पूर्णता का अनुभव कराते हैं!
जिसे जानने से बस,खुद को भी जानने का मार्ग खुले,
जो है खुद प्रश्न भी,समाधान भी,सबका पालनहार हैं!
वो नाम एक बस शिव है.....



डॉ.सूर्य प्रताप राव
रेपल्ली, मुंबई

ग़ज़ल

वफ़ा के सिले में जफ़ा कर रहे हो
सितम पे सितम तुम अता कर रहे हो

क़फ़स में तो बरसों ही रक्खा था तुमने
कतर कर परों को रिहा कर रहे हो

बना कर मुझे ख़ाक तुम बेरुख़ी से
मिरे वास्ते क्यूँ दुआ कर रहे हो

ये झूठे दिलासे डराने लगे हैं
मुझे मेरे हक़ से जुदा कर रहे हो

यक़ीं दे रहे हो मुझे तुम वफ़ा का
निगाहें चुरा कर दग़ा कर रहे हो

ज़माने से 'काज़ी' को रुस्वा करा कर
नया एक तमाशा खड़ा कर रहे हो



डॉ. वासिफ़ काज़ी
इंदौर

नया भारत

चढ़ दुश्मन की छाती पे तिरंगा हमने लहराया है,
नींद से उठकर देख ले, दुनिया नया भारत बनाया है ।

रक्त से सींचकर खेतों को, अन्न का पर्व मनाया है,
विज्ञान की ज्योति जलाकर, नभ का राज मुकुट पाया है।

सीना तान दहाड़ उठा, जब चाँद पे झंडा लहराया है
भारत माँ के लालों ने, इतिहास नया लिखवाया है ।

सूरज-सी तपिश थी भीतर, पत्थर को फूल बनाया है
आँधियों से खेलकर हमने, दीप अमर जलाया है ।

सीमाओं पर अडिग खड़ा, हर सैनिक मुस्काता है,
तन, मन, धन अर्पण कर के, भारत को महकाया है ।

कर्नल (डॉ) राहुल शर्मा
कर्नाटक

ग़ज़ल

मसर्रत के गुल अब तो खिलने लगे हैं
जो बिछड़े हुए थे वो मिलने लगे हैं

उजाले लुटाने की ख़ातिर ही हम तो .
दिए बन के महफ़िल में जलने लगे हैं

हुईं खुश्क़ मुद्दत से जो ये निगाहें
जमे दर्द दिल के पिघलने लगे हैं

दिखाया ज़माने को सच जब से हमने
दिलों में सभी के खटकने लगे हैं

नशा है उन्हें जब से पाई हुकूमत
अभी से वो तेवर बदलने लगे हैं

दिलों में उजाले बढ़े हैं यकायक,
फ़रेबों के साये सिमटने लगे हैं

बढ़ा है हुजूम-ए-बग़ावत अचानक,
मुसाहिब सभी अब खिसकने लगे हैं

अरे 'काज़ी' क्या पूछते हो ग़ज़ल का .
ये मिसरे तो दिल से निकलने लगे हैं



डॉ. वासिफ़ काज़ी
इंदौर

मेरा देश

मेरा देश प्यारा है।
सबसे यह न्यारा है॥

अलग अलग बोली है,
इसमें सब हमजोली है।
विभिन्न धर्मों के होकर भी,
सभी की यहाँ होली है।

अलग अलग परिधान है,
त्योहारों की अपनी शान है।
अलग अलग भाषा है,
ज्ञान की अभिलाषा है।

पंछी, पेड़ यहां गाते हैं,
नदियों से सुर मिलाते हैं।
खेत भी लहलहाते हैं,
राष्ट्र की आन बन जाते हैं।

मेरा देश प्यारा है।
सबसे यह न्यारा है॥



संगीता अहलावत
दिल्ली



ग़ज़ल

चुप-चुप तेरा आकर-जाना रास न आता है
यादों में सावन का मौसम बहुत सताता है।

बैठे-बैठे याद तुम्हारी जब भी आती है
तन्हाई में मिलन पुराना बहुत रुलाता है।

बागों में तेरा मेरा वह हाथ पकड़ चलना
कितना अच्छा लगता है जब मन भर आता है।

वह मुस्काकर हाथ पकड़ना और छुड़ा लेना
सभी कामनाओं को अम्बर तक ले जाता है।

तेरे अधरों ने अधरों पर नाम का लिखा था जो
रंग भरे मौसम में बरबस याद दिलाता है।

लुका छिपी का खेल कभी खेले थे याद करो
वह पल नभ की मुझे आज भी सैर कराता है।

बांहों के झूले सावन के झूलों के जैसे
तेरा मिलना साथ बैठना बहुत सुहाता है।

तेरा नाम पुकारे फिरती हूँ मैं गली गली
लेकिन तू मेरे मन को कितना तरसता है।



संगीता अहलावत
दिल्ली



जन्माष्टमी जन्मोत्सव

भादों मास की अष्टमी, छाई घटा घनघोर,
काली अन्धेरी रात में, जन्मे नन्द किशोर।
कारागार के द्वार खुल गये, वासुदेव कृष्ण को ले निकले,
चरण छूने को आतुर, यमुना जी बढ़ी प्रभु की ओर॥

देवकी की आँखों का तारा, बना यशोदा का दुलारा,
नन्द गाँव में धूम मची है, यशोदा मईया झूम रही है।
गोकुल में आनन्द और उल्लास है छाया,
घर आँगन फूलों से सजाया, कान्हा का जन्मदिन है आया॥

मोर मुकुट सिर पर साजे, लटें हैं घुँघराले बालों की,
सजधज कर झूला झूलें, नन्द बाबा के मदन गोपाल जी।
माखन मिश्री का भोग लगाकर, सारा जग हुआ निहाल,
गोकुल में गूँज रहा है स्वर, जय कन्हैया लाल की हाथी घोड़ा पालकी॥

नटखट माखन चोर बंधी है, जिससे प्रीत की डोर,
बंसी की धुन पर गोपियाँ नाचे रास रचाये चित चोर।
दधि हाँडी का खेल निराला, घर घर गोबिन्दा आला,
माखन की मटकी चुराकर, सब खा गये माखन चोर॥

कालिया नाग का घमंड मिटाया, एक उँगली पर गोवर्धन उठाया,
कुरुक्षेत्र में गीता का ज्ञान सुनाया, कर्म का सच्चा मार्ग दिखाया।
हरे कृष्ण हरे मुरारी, पूजती है जिसे दुनिया सारी,
सम्पूर्ण जगत में हर्ष और उमंग है छाया, जन्माष्टमी का पर्व है आया॥







भारती कुमार
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

धागे का वादा

कलाई पर बंधा एक नाज़ुक सा धागा,
भाई-बहन के प्यार की डोर कहलाता।
राखी के साथ लिपटी हैं सौ यादें,
बचपन की शरारत और दुलार लाता।

एक थाली में मिठाई और चंदन,
आँखों में नमी और होंठों पर हंसी।
दूर शहर में भी धड़कन एक है,
वीडियो कॉल पर भी धागा वही बंधा।

तू रक्षा करेगा हर मुश्किल में,
मैं दुआ बनूँ तेरे हर कदम में।
बंधन का रिश्ता, साथ में प्यार भी,
बस निस्वार्थ प्रेम का संगम है।

ये धागा कमजोर लगे शायद,
पर वादों से ज्यादा मजबूत है।
रक्षाबंधन सिर्फ त्यौहार नहीं,
ये जन्मों का रिश्ता अनमोल है।





नीतू पाराशर
पाली, राजस्थान

गीत

सावन आया रे, शिव-रस लाया रे

सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।
रिमझिम बरसे मेघ गगन से,
मन ने शिव को फिर से पाया।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

घन घिर आए नील गगन में,
बिजुरी चमकी सावन वन में।
रिमझिम बूँदें गीत सुनाएँ,
सूखी धरती अब हर्षाएँ।
माटी महकी, सौंधी-सौंधी,
मन में प्रेम नया जगाया।
धरती ने हरियाली ओढ़ी,
मन ने शिव का नाम गुनगुनाया।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

बूँद-बूँद जल लेकर भक्त,
शिव के द्वारे जाते हैं।
"ॐ नमः शिवाय" जपते-जपते,
मन के मैल मिटाते हैं।
शिवलिंग पर जलधारा है,
मन की भी एक धारा है।
बाहर जल से अभिषेक हुआ,
भीतर अहं विसर्जित हुआ।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

गंगा बोले, निर्मल बहना,
मन भी निर्मल रखना।
द्वेष-कलुष सब दूर बहा दो,
प्रेम-सुधा में रहना।
हर बूँद कहे, पावन हो जा,
हर लहर कहे, बहना।
गंगाजल जब शीश चढ़े तो,
मन का विष भी बहना।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

गंगा बोले, निर्मल बहना,
मन भी निर्मल रखना।
द्वेष-दाह सब दूर बहा दे,
प्रेम-सुधा में बहना।
बूँद-बूँद कहे, पावन हो ले,
लहर-लहर कहे, बहना।
शीश चढ़े जब गंगाजल तो,
मन का विष भी बहना।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

हे नीलकंठ, हे भोलेनाथ!
मन का मेरा विष हर लेना।
क्रोध-द्वेष का तम मिटा दो,
प्रेम-सुधा से मन भर देना।
मेरी वाणी मधुर बना दो,
कर्मों में पावनता देना।
हर प्राणी में शिव दिख जाएँ,
ऐसी दृष्टि मुझको देना।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।

बाहर बरसा मेघ गगन से,
भीतर प्रेम-सुधा बरसाया।
धरती ने हरियाली ओढ़ी,
मन ने शिव का नाम गाया।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया।
मन-मंदिर में दीप जला है,
मन ने शिव को फिर से पाया।
सावन आया रे, सावन आया,
शिव-रस की फुहारें लाया...
मन-मंदिर में शिव को पाया...।



चित्रा शर्मा
कर्नाटक

राखी की डोर

राखी की डोर नहीं केवल, धागा यह विश्वास है,
भाई-बहन के पावन रिश्ते का, इसमें मधुर एहसास है।
बहना जब थाली सजाती, दीपक झिलमिल करता है,
भाई की कलाई पर बाँधकर, प्रेम अमर हो जाता है।
रोली, अक्षत, चंदन से, माथे पर तिलक लगाती,
भाई की लंबी उम्र की, हर पल दुआएँ गाती।
बचपन की मीठी यादों का, इसमें सुंदर संसार है,
नटखट झगड़े, रूठना-मनाना, सबका मधुर प्यार है।
यह डोर नहीं कमजोर कभी, रिश्तों की पहचान है,
सुख-दुःख में संग रहने का, पावन-सा अरमान है।
जब तक जग में प्रेम रहेगा, तब तक इसका मान,
राखी की डोर सदा जोड़े, भाई-बहन के प्राण।



डॉ. शंकर घनशामदास अंदानी
अहिल्या नगर

शिवजी का महिमा

श्रावण मास पवित्र और भक्ति का कहलाया है
हर हर महादेव, ॐ नमः शिवाय से गूंजे शिवालय
बिल्वपत्र,जल,दूध,धतूरे के फूल प्रिय शिवजी के
जटा में गंगा,चंद्रमा कंठ में विष और सर्प धारे हैं
भोलेनाथ कहलाये शरणागत के दुःख हरते हैं
ललाट में त्रिनेत्र और हाथों में त्रिशूल डमरू वाले हैं
भारत भूमि के बारह ज्योतिर्लिंग में स्वयं बिराजे है
महादेव संग माता पार्वती, कार्तिकेय, गणेशजी है
रुद्राक्ष की माला भूतों की टोली नंन्दी की सवारी हैं
तपस्वी, त्यागी, उपासी और कैलाश के वासी हैं
करते रक्षा भक्त की और रहते हमेशा साथ है।



मितल टिलवा
गुजरात

राखी की डोर पुकार रही है

कभी राखी की डोर में, पूरा संसार बँधा करता था,
भाई की कलाई पर बहन का स्नेह खिला करता था।
न कोई संदेश मोबाइल का, न कोई डिजिटल उपहार,
एक स्नेहिल मुस्कान ही थी, रिश्तों का सच्चा श्रृंगार।

दादी की गोद में बैठकर, त्योहारों के किस्से सुनते थे,
माँ के हाथों के पकवानों में, संस्कारों के दीप चुनते थे।
आँगन में मिलते भाई-बहन, खिलखिलाता था परिवार,
राखी केवल धागा नहीं था, वह था रिश्तों का आधार।

अब स्क्रीन पर राखी आई है, इमोजी में भाव समाए हैं,
वीडियो कॉल की दूरी में, कितने रिश्ते सिमट आए हैं।
उपहार ऑनलाइन पहुँच गए, पर मन की दूरी कौन मिटाए?
डिजिटल दुनिया जीत गए हम, पर अपनों को कब गले लगाए?

त्योहारों की रंगत फीकी है, आँगन सूने-सूने हैं,
अपने ही संसार में खोए हम, रिश्ते कितने अधूरे हैं।
संस्कारों की वह मधुर विरासत, कहीं धूल में सो न जाए,
राखी की यह पावन डोरी, फिर से हमें जोड़ने आए।

आओ फिर उस संस्कृति को, अपने जीवन में स्थान दें,
रिश्तों को केवल नाम नहीं, सच्चे मन से सम्मान दें।
कलाई पर बँधे धागे से, दिल का बंधन फिर जागे—
राखी केवल धागा नहीं,
रिश्तों को जीवित रखने का वादा बन जाए।





रेखा सिंघल
उत्तराखंड

स्वातंत्र्य : स्वप्न से शिखर तक

स्वाधीनता के सूर्योदय से, नवयुग का नव-निर्माण हुआ,
रज-कण से लेकर अंतरिक्ष तक, भारत का उत्थान हुआ।
मंगलयान ने मंगल-गगन में, विजय-ध्वजा फहराई,
चंद्रयान ने चंद्र-चूड़ा पर, भारत की कीर्ति सजाई;
परमाणु से प्रक्षेपास्त्र तक, विज्ञान हुआ बलवान
जय-विज्ञान, जय-विकास, जय भारत महान!

कृषि-क्रांति ने अन्न-भंडार भरे, हरित धरा मुस्काई,
श्वेत-क्रांति ने दुग्धधारा की, नव-गंगा बहलाई।
डिजिटल युग के दिग्दर्शन से, जग को राह दिखाई,
सड़क, रेल, अंतरिक्ष, चिकित्सा—हर दिशा हुई सुखदायी।
साक्षरता, स्वावलंबन, स्वदेशी शक्ति का विस्तार
स्वतंत्र भारत ने गढ़ डाला, प्रगति का नव संसार!

हिमगिरि-सा अडिग हमारा गौरव, सागर-सा विस्तार,
वसुधा के व्योम-पटल पर अंकित, भारत का जयकार।
जहाँ कभी परतंत्रता की रात्रि थी, वहाँ प्रभात प्रखर है,
हर उपलब्धि के शिखर पर आज, तिरंगा निर्भय लहर है।
शत-संघर्षों की स्वर्णिम स्मृति, शत-संकल्पों का मान—
स्वातंत्र्य केवल अधिकार नहीं राष्ट्रोत्थान का महायज्ञ महान!



डॉ मिनल डोंगरे 'स्याही'
इंदौर



मेरे भारत की गाथा

मेरे भारत की माटी में,
कुछ ऐसी खुशबू रहती है,
जिसको छूकर हर पीढ़ी फिर,
अपनी पहचान कहती है।

यह केवल भूगोल नहीं है,
यह सदियों का इतिहास है,
इसके कण-कण में बसता
वीरों का विश्वास है।

हिमालय इसका प्रहरी बनकर,
सीमा पर तन जाता है,
सागर इसके चरण पखारकर,
भारत-गौरव गाता है।

गंगा की निर्मल धारा में,
संस्कृति का संसार है,
मरु की तपती रेत बताती—
धैर्य यहाँ हथियार है।

मेरे भारत की शान रहे,
ऊँचा सदा तिरंगा रहे,
जब तक सूरज-चाँद रहें,
भारत माँ का जयकारा रहे।

कभी राम की मर्यादा बनकर,
कभी कृष्ण की गीता बनकर,
कभी बुद्ध की करुणा बनकर,
कभी विवेक की चेतना बनकर,

यह धरती दुनिया से कहती—
मानवता सबसे महान है,
जिसके मन में प्रेम बसा हो,
वही सच्चा इंसान है।

कभी कबीर के दोहे बनकर,
कभी रहीम की वाणी बनकर,
कभी मीरा की भक्ति बनकर,
कभी नानक की बानी बनकर,

इस धरती ने जग को सिखलाया—
प्रेम ही सबसे बड़ा ज्ञान,
भिन्न दिशाएँ, भिन्न भाषाएँ,
फिर भी एक हमारा प्राण।

यहाँ दीपावली के दीपों में,
ईद की मिठास भी है,
गुरुपर्व की पावन वाणी,
होली के रंगों की आस भी है।

क्रिसमस की घंटी बजती है,
बैसाखी का उल्लास है,
अनेक फूल हैं इस उपवन में,
फिर भी भारत एक सुवास है।

किसी गाँव की पगडंडी पर,
जब किसान निकलता है,
उसके माथे का पसीना ही
देश का भविष्य लिखता है।

धरती माँ की छाती चीरकर,
बीज नया वह बोता है,
अपने हिस्से की धूप सहकर,
सबके घर अन्न संजोता है।

उस किसान को नमन हमारा,
जिससे हर घर का चूल्हा जलता,
जिसके श्रम से भारत माँ का
हर आँगन खुशियों से खिलता।

कारखाने में श्रमिक खड़ा है,
रेल चलाता कोई है,
सीमा पर प्रहरी जाग रहा,
देश बचाता कोई है।

कक्षा में शिक्षक दीप जलाता,
ज्ञान बाँटता कोई है,
प्रयोगशाला में बैठा युवा,
नया भविष्य बनाता कोई है।

कोई नभ में उड़ान भरता,
कोई सागर नाप रहा,
कोई अंतरिक्ष की सीमा पर
भारत का परचम थाम रहा।

जिस दिन श्रम और ज्ञान मिलेंगे,
उस दिन ऐसा सूरज होगा,
जिसकी किरणों से दुनिया में
भारत का उजियारा होगा।

पर याद रहे, देशभक्ति केवल नारे में नहीं,
यह जीवन के व्यवहार में होनी चाहिए।
भारत माँ की जय कहना आसान है,
भारत को बेहतर बनाना जरूरी है।

जब सड़क पर कचरा दिखे,
और हम उसे उठाएँ,
जब किसी भूखे बच्चे को
अपनी रोटी का अंश खिलाएँ।

जब रिश्वत से इंकार करें हम,
जब सच के साथ खड़े हों,
जब कमजोरों की आवाज़ बनें,
तब समझो हम देशभक्त बड़े हों।

देशप्रेम केवल सीमा पर
गोली खाने वालों का नहीं,
यह खेतों में पसीना बहाने,
ईमानदारी से काम करने वालों का भी है।

यह शिक्षक की मेहनत में है,
यह विद्यार्थी की लगन में है,
यह माँ की प्रार्थना में है,
यह सैनिक के मन में है।

सीमा पर जो प्रहरी जागे,
उनको शत-शत नमन हमारा,
जिनकी आँखों में नींद नहीं है,
उनसे सुरक्षित देश हमारा।

बर्फीली चट्टानों पर भी
जिनके कदम नहीं डगमगाते,
भारत माँ के वीर सपूत वे
मृत्यु से भी नहीं घबराते।

उनकी वीरगाथा सुनकर
हम केवल जयकार न करें,
उनके बलिदान का अर्थ समझकर
अपने कर्तव्य से प्यार करें।

देश उन्हें तब सच्चा माने,
जब हम अपने हिस्से का
ईमान निभाएँ, कर्म करें और
भारत का सम्मान करें।

तिरंगा केवल कपड़ा नहीं,
यह शौर्य, त्याग और मान है,
केसरिया साहस का सूरज,
श्वेत शांति की पहचान है।

हरा रंग धरती की आशा,
नीला चक्र गतिमान है,
इसके आगे शीश झुकाना
भारत का सम्मान है।

ओ मेरे देश के नौजवानों,
तुमसे मेरी बात रहे,
आँखों में ऊँचे सपने हों और
हाथों में सौगात रहे।

तुम कल के भारत के निर्माता,
तुम ही उसकी आस हो,
तुममें ही विज्ञान, विवेक और
साहस का प्रकाश हो।

मोबाइल की चमक से आगे
दुनिया को पहचानो तुम,
ज्ञान की गहराई में उतरकर
अपनी राह बनाओ तुम।

हार मिले तो रुकना मत तुम,
अंधियारा हो झुकना मत,
अपने श्रम के दीप जलाकर
कभी भाग्य को कोसना मत।

भारत को ऊँचा करना है तो
पहले खुद को ऊँचा करना होगा,
झूठ, छल और आलस छोड़कर
सत्य का हाथ पकड़ना होगा।

देश बदलने की बातें करने से
देश नहीं बदला करता,
जब नागरिक बदलता है तभी
राष्ट्र नया आकार धरा करता।

आओ मिलकर शपथ उठाएँ—
नफरत को न पनपने देंगे,
जाति-धर्म के नाम पर
दिलों को न बँटने देंगे।

भाषा, बोली, वेश अलग हों,
फिर भी मन एक रहेगा,
भारत की एकता का दीपक
हर घर में रोशन रहेगा।

न कोई छोटा, न कोई बड़ा,
सब भारत की संतान हैं,
जिस मिट्टी ने जन्म दिया है,
उसके हम ऋणी महान हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारी,
कच्छ से अरुणाचल तक,
एक धड़कन, एक तिरंगा,
भारत की पहचान है।

जब इतिहास के पन्ने खुलते,
वीरों की आवाज़ सुनाई देती,
भगत सिंह की निर्भीकता,
आजाद की हुंकार सुनाई देती।

गांधी का वह सत्य पुकारे,
सुभाष का संकल्प जगाए,
रानी लक्ष्मीबाई की तलवार
आज भी साहस सिखलाए।

उनके सपनों का भारत बनाना
हम सबकी जिम्मेदारी है,
आजादी केवल उत्सव नहीं,
यह प्रतिदिन की पहरेदारी है।

लोकतंत्र की गरिमा रखना,
संविधान का मान करें,
अपने अधिकारों के साथ-साथ
अपने कर्तव्यों का ज्ञान करें।

भारत तब मजबूत बनेगा
जब हर हाथ को काम मिलेगा,
हर बच्चे को शिक्षा होगी,
हर चेहरे को सम्मान मिलेगा।

जब विज्ञान खेत तक पहुँचेगा,
जब गाँव शहर से जुड़ेंगे,
जब अवसर सबको मिल पाएँगे,
तब भारत के सपने खिलेंगे।

मैं उस भारत का सपना देखूँ
जहाँ किसी आँख में भय न हो,
जहाँ किसी मन में भेद न हो,
जहाँ किसी घर में अभाव न हो।

जहाँ बेटियाँ निर्भय चलें,
जहाँ बेटे संस्कार सीखें,
जहाँ बुजुर्गों के अनुभव से
नई पीढ़ी अपने पंख सीखे।

मैं उस भारत का सपना देखूँ
जो दुनिया को राह दिखाए,
ज्ञान, शांति और मानवता का
नया दीप हर ओर जलाए।

शक्ति हो लेकिन अहंकार न हो,
समृद्धि हो पर संस्कार रहे,
विज्ञान बढ़े, पर मानवता का
हर पल जीवित आधार रहे।

और जब कभी समय पूछेगा—
"तुमने अपने देश को क्या दिया?"
हम गर्व से इतना कह पाएँ—
"ईमान से अपना कर्म किया।"

न हमने नफरत बाँटी जग में,
न हमने विश्वास बेचा,
जिस मिट्टी ने जीवन दिया था,
उसका हमने मान रखा।

फिर नभ में तिरंगा लहराएगा,
फिर भारत मुस्काएगा,
मेहनत की हर एक बूंद से
नया सवेरा आएगा।

विश्व-पटल पर गर्व से फिर
भारत अपना नाम लिखेगा,
हर भारतीय के माथे पर
गौरव का सूरज दिखेगा।

मेरे भारत! तेरी खातिर
शब्द मेरे कम पड़ जाएँ,
तेरी महिमा लिखते-लिखते
सदियाँ भी कम पड़ जाएँ।

तेरी माटी, तेरी नदियाँ,
तेरे पर्वत, तेरे गाँव,
तेरे श्रम से, तेरे प्रेम से
रोशन हों संसार के पाँव।

जब तक मेरी साँस चलेगी,
तेरा ही गुणगान रहेगा,
मेरे मन के हर कोने में
भारत का सम्मान रहेगा।

तन मिट जाए, मन मिट जाए,
मिट जाए मेरा अभिमान,
लेकिन अंतिम धड़कन बोले—
भारत माँ को शत-शत प्रणाम!

मेरे भारत की शान रहे,
ऊँचा सदा तिरंगा रहे,
जन-जन के मन में प्रेम रहे,
भारत सदा अखंड रहे।

जब तक सूरज-चाँद रहें,
जब तक धरती-आकाश रहे,
हर भारतीय के हृदय में
भारत का विश्वास रहे।

जय हिंद!
जय भारत!



मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर



माता पार्वती और भगवान शिव की महिमा

भँवरों के संग खेल रही वो तितली के पाँछे भाग रही थी ।
अपने नन्हे पैरों की मृदु झाँझर को झनकार रही थी ।
सखियन के संग उपवन में विधि पुष्पों को वो निहार रही थी ।
बालिका थी ये पर्वतराज की शिवजी पर मन वार रही थी ।
पिछले जन्म की बातें थी कोमल जिन्हें याद कर मुस्काय रही थी ।
शिव का मोहक रूप सोच के मन में सब कुछ पाय रही थी ।
कैसे सुनायी थी अमरकथा शिव ने उसको करके जयकारा ।
कहा उन्होंने सुनते सुनते भरना है तुमको हुंकारा ।
सती की आँख लगी थीं अचानक गाथा को सुनने लगा एक तोता ।
तोता हुंकारा भरता रहा पर सती को पड़ गया गहरा सोता ।
एक दिन दक्ष ने यज्ञ किया शिव को पाहुना बनाया नहीं था ।
इसका कारण माता सती की समझ में कोई आया नहीं था ।
शिव के मना करने पर भी इकली पहुँचीं हैं तात दुआरे ।
पति का आसन देखा नहीं तो ज्वाला बन गईं क्रोध के मारे ।
जा यज्ञाग्नि में कूद गईं और श्राप पिता को दे रहीं भारे ।
देखूँ कौन तुम्हारा हितैषी जो तुमको इस पाप से तारे ।
शिवजी ने जब जाना सती की जान गई तो धाय लिए हैं ।
माता की देह लिए जग में तांडव करते वो भाग लिए हैं ।
नैन गिरे वहाँ नैना देवी शीश गिरा चामुंडा हुईं हैं ।
ऐसे ही जहाँ जहाँ अंग गिरे इक्यावन शक्ति स्थापित हुईं हैं ।
शिव की स्मृति जाती नहीं मन पर अंकित है उनकी माया ।
शिव को वरूँगी इस जन्म में भी यही वर मेरे मन को भाया ।
बैठ गई तप करने को बारह वर्षों हिम ताप सहा है ।
मानी किसी की बात नहीं बस मन में शिव का ध्यान रहा है ।
ब्याह हुआ शिव गौरा का गौरा शिव नगरी आय गई है ।
अपने भौतिक सुखों को छोड़ वो शिवमय हो मुस्काय रही है ।
महादेव का रूप निराला गौरा के संग साज रहा है ।
अब शिव शक्ति का डंका तीनों लोकों में बाज रहा है ।



डॉ. साधना अग्रवाल 'साधिका'
खुर्जा (बुलंदशहर) उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

नई दुनिया बसाना चाहता है
वो वापस गाँव आना चाहता है ।

शहर में अब नहीं दिखते परिन्दे
नया जंगल बसाना चाहता है ।

उदासी गिड़गिड़ा कर कह रही थी
मुझे क्यों खिलखिलाना चाहता है ।

जिसे वो कर चुका तेरे हवाले
उसी दिल को चुराना चाहता है ।

बदल पाया नहीं जो एक पल को
वही बदलाव लाना चाहता है ।

वो भूखे पेट सूने खेत तकता
ये पंछी एक दाना चाहता है ।

गुलों की शाख बन के दिल चमन में
तुम्हे खुशबू बनाना चाहता है ।

दूर से ही सही मुस्कुराओ
आप हमसे न दामन छुड़ाओ ।

यूँ मनाने की आदत नहीं पर
बेवज़ह ही कभी रूठ जाओ ।

इक समंदर है मेरे लबों पे
प्यार का आप दरिया बहाओ ।

खेत खलिहान अपनी धरोहर
चाँद तारों से मत आज़माओ ।

खूबसूरत है हर इक अदा पर
पाँव में आज मेहंदी लगाओ ।

इस जहाँ में सभी चल रहे हैं
दो क़दम आप भी तो बढ़ाओ ।

रौशनी है मगर एक दीपक-
घर की दहलीज़ पे भी जलाओ ।



कमलेश व्यास 'कमल'
उज्जैन (म.प्र.)

स्वतंत्रता - गान

15 अगस्त आया,
खुशियों को साथ लाया।
आजादी का ये दिन है,
इसको कर न जाया।
कर्मठता का दे संदेशा,
स्वतंत्र प्रकाश छाया।
उठने को ऊँचे - ऊँचे,
उत्साह है समाया।
15 अगस्त आया,
फहरे जो ये तिरंगा।
अविराम यूं गगन में,साहस,
सुहित व उल्लास है,
भर देता हर इक तन में।
रखना है आन इसकी,
रखना है शान इसकी,
हर वासी का कर्तव्य है,
रखना है बान इसकी।
है अँधेरे को मिटाना,
हर कष्ट को मिटाना।
पाप अनाचार को है,
राष्ट्र से भगाना।
सही राह पर चलेंगे,
तब ही तो होगा मंगल।
लेना है आज प्रण ये,
कटने न देंगे जंगल,
वीरों के जाने कितने,
बलिदानों का ये फल है,
मरते हुओं की रखना,
झंडे का मान-बल है,
शत्रु अगर आ जाये,
हो सब ही दायें-बायें।
है सबकी जिम्मेदारी,
क्यों वीर हम गंवाये।
आओ सभी हम गायें,
विश्वास ये जगायें।
नवयुवकों की नव सेना,
भारत नया बनाये।



सुधा अरोरा
इंदौर

ग़ज़ल

कही भीगी आँखों में जाले मिलेंगे,
कही रक़्स करते उजाले मिलेंगे ।

मिलेंगे तुम्हें कुछ मिज़ाज ए मलंग भी,
यहाँ लोग तुमको निराले मिलेंगे ।

ये भारत है संतों की पावन धरा ये,
यहाँ हर क़दम पर शिवाले मिलेंगे ।

यहाँ नौनिहालों की हैं धूम देखो,
इन्हें माँ के हाथों निवाले मिलेंगे ।

अगर लौट आए वो फ़ैशन पुराना
हमें तन पे आँचल दुशाले मिलेंगे ।

अगर वक्त दोहराए ख़ुद को यहां पर
हमें दूध रबड़ी के प्याले मिलेंगे?

चढ़ा दे जहां शीश चरनों में माँ के
कहाँ तुम को ऐसे जिआले मिलेंगे ।

लड़ाई लड़ी पीठ पर बाँध बच्चा
कहां तुम को ऐसे हवाले मिलेंगे ।

किले की दर ओ बाम पर ख़ूँ के धब्बे,
बयाँ करते वीरो के नाले मिलेंगे ।

हिमांशु व्यास
इंदौर



सपने देखती औरतें

ना जाने औरते
क्यों देखती है सपने
विवाहित होने का
सुखी होने का
खो जाती
औरते सपनों में
रोटी बेलते हुऐ
प्रसव पीड़ा झेल
माँ बनते हुए
तीज त्यौहारों पर सज
झूठी सी मुस्कान
बिखेरते हुए
अनचाहे पति को
झेलते हुए

औरते क्यों देखती हैं सपने
पति की शारीरिक मांग
पूरी करते हुए
नौकरी और गृहस्थी मे
खपते हुए
क्यो देखती हैं औरते सपने
देवी अर्धांगिनी का तमगा
पाते सुनते हुए
औरते कब मांगेगी हिसाब अपना
कब मांगेगी हिस्सा अपना
कब तोड़ेगी सामाजिक बेड़ियाँ
एक दिन जरूर मांगेगी
हिसाब हिस्सा अपना
तोड़ डालेंगी कुत्सित बेड़ियाँ
सपने देखते हुए।



वी पी दिलेन्द्र
जयपुर

ग़ज़ल

सदा से मुल्क़ पर हावी सियासत
छुपाए कब छुपी है ये हक़ीक़त

हमारे दिल में जब तक खौफ़ ज़िंदा
रहेगी हम पे ज़ालिम की हक़ूमत

उन्हीं का नाम अब तक सुर्खियों में
वतन की करते हैं जो भी तिज़ारत

सुकूँ मैं बाँटता हूँ हर किसी को
जहां वालों मेरा मज़हब मोहब्बत

बग़ावत के ज़माने में है जीना
अगर तो छोड़नी होंगी शराफ़त



बलजीत सिंह बेनाम
हाँसी (हरियाणा)



ख़ुद को फिर से लिख रही हूँ,

ख़ुद को फिर से लिख रही हूँ,
कुछ ख़्वाबों की स्याही से...
कुछ दर्द छुपाकर लफ़्ज़ों में,
कुछ अश्कों की रवानी से ।

वो दौर भी क्या दौर था,
जब हर लफ़्ज़ में कोई अपना था...
अब तन्हाई भी महफ़िल है,
और ख़ामोशी भी अफ़साना है ।

कलम वही है, काग़ज़ वही,
बस ज़िंदगी का रंग बदल गया...
कल तक ख़ुद से अनजान थी,
आज ख़ुद से मिलना आ गया ।

जो लिखा नहीं जा सका कभी,
वो अब ग़ज़ल बनकर उतर रहा है...
ख़ुद को फिर से लिख रही हूँ,
और वक़्त ख़ामोशी से पढ़ रहा है ।

नैना कोहली
इंदौर



राधा-कृष्ण

राधा
कृष्ण नाम सुन लेने पर ही
याद आते है बंसी और
राधा
वृषभानू सुताये राधा प्यारी
मधुसूदन माघवाए हितकारी राधा प्यारी
राधा के अनेक रूप
राधा रसिकाए दिव्यनारी
केशवी, कृष्णि राधा- राधिकाए
राधा पुष्प धारी
वृषभानू सुताये राधा प्यारी
राधा रासलीला शक्ती
रूपाए
राधा प्यारी
द्वशक्ति रूपाए
राधा कृष्ण मुरारी
गुकुल निवासाए, कृष्ण
प्रेमीकाए
वृषभानू कीर्ति आत्मजाए राध्या
सर्वशक्तिमानआये राध्या हरीप्रिया
राध्या मुरारी
वृषभानू सुताय राध्या प्यारी
मधु सुदन माधवाए हितकारी

भव्या



कफन में लिपटा गौरव: एक शहीद की अमर गाथा



शिखा अग्रवाल
देहरादून, उत्तराखंड

सावन का महीना बीत रहा था और भादो की सुनहरी धूप गाँव की पगडंडियों पर पसरने लगी थी। सुरभि के छोटे से कमरे में दो चीज़ें एक-दूसरे के अगल-बगल रखी थीं—एक तरफ लाल और सुनहरे रेशमी धागों से बुनी हुई एक सुंदर सी राखी, जो उसने अपने भाई अमित के लिए बनाई थी और दूसरी तरफ अमित की सैनिक यूनिफॉर्म की एक मुस्कुराती हुई तस्वीर।



सुरभि बार-बार उस राखी को उठाती और तस्वीर के पास रखकर देखती। केवल दो दिन बाद 15 अगस्त है और उसके ठीक दो दिन बाद रक्षाबंधन। इस बार का स्वतंत्रता दिवस सुरभि के परिवार के लिए केवल एक राष्ट्रीय पर्व नहीं, बल्कि उनके जीवन की सबसे बड़ी खुशी का दिन था। भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में तैनात उसका बाईस वर्षीय भाई अमित को इस बार दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले की स्वतंत्रता दिवस परेड में शामिल होने वाली टुकड़ी में चुना गया था।

तीन दिन पहले सीमा से फोन करके अमित ने जो बेबाक और बुलंद आवाज़ में कहा था, वह सुरभि के कानों में आज भी गूंज रहा थी—

"दीदी! इस बार 15 अगस्त को बापू और माँ को टीवी के आगे से हटने मत देना! तुम्हारा भाई इस बार सीमा पर नहीं, बल्कि दिल्ली के लाल किले पर तिरंगे के ठीक सामने कदमताल करेगा। जब प्रधानमंत्री जी ध्वजारोहण करेंगे, तो सबसे आगे मार्च करती टुकड़ी में आपका भाई अमित दिखाई देगा!"

पिता रामनाथ जी, जो जिंदगी भर खेती-किसानी करके अपनी कमर झुका चुके थे, आज गाँव भर में सीना चौड़ा करके घूम रहे थे। चाय की दुकान हो या चौपाल, वे हर राहगीर को रोककर यही कहते, "अरे भैया! इस बार टीवी का रिचार्ज ठीक से करवा लेना। हमारा अमित लाल किले की परेड में पूरे देश के सामने भारत माता को सलामी देने जा रहा है!"

घर के अंदर रसोई में माँ कौशल्या देवी सुबह से ही अमित की पसंदीदा बेसन के लड्डू बनाने में जुटी थीं। सुरभि रसोई

में जाकर चिढ़ाती, "माँ, भाई तो लाल किले पर होगा, तुम यहाँ लड्डू किसके लिए बना रही हो?" माँ अपने आँचल से माथे का पसीना पोंछते हुए मुस्कुरातीं, "पगली! परेड खत्म होते ही उसे तीन दिन की छुट्टी मिली है। देखना, वह 15 की शाम तक सीधे घर पहुंचेगा। उसके आने से पहले लड्डू तैयार न रखे तो आते ही मेरी गोद में सिर रखकर शिकायत करने लगेगा।"

जहाँ गाँव में खुशियों के दीये जल रहे थे, वहीं सरहद की बर्फीली पहाड़ियों पर घना कोहरा छाया हुआ था । अमित अपनी बैरक में बैठा अपनी लाल किले वाली विशेष परेड यूनिफॉर्म को निहार रहा था। उसके जूते शीशे की तरह चमक रहे थे। उसकी ट्रेन अगली सुबह जम्मू से दिल्ली के लिए रवाना होने वाली थी।

तभी... अचानक पूरी बैरक में लाल बत्ती जल उठी और सायरन की चीख ने सन्नाटे को चीर दिया।

"अलर्ट! एलओसी के पास सेक्टर-4 में भारी घुसपैठ! आतंकवादी हथियारों के साथ सीमा में घुसे हैं!"

कमांडिंग ऑफिसर का आदेश मिलते ही लाल किले की परेड की तैयारी कर रहे जवानों को मोर्चे पर तैनात होना पड़ा। अमित ने एक पल के लिए अपनी परेड वाली टोपी को देखा, फिर अपनी असॉल्ट राइफल उठाई, सीने पर मैगज़ीन बांधी और भारत माता का जयकारा लगाते हुए घने कोहरे में ओझल हो गया।

पहाड़ियों की ओट में छिपे आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी । अमित अपनी टुकड़ी के साथ आगे बढ़ रहा था कि अचानक एक सनसनाती हुई गोली उसकी छाती को चीरती हुई निकल गई। अमित बर्फ पर गिरा, पर उसकी पकड़ राइफल पर ढीली नहीं पड़ी। खून से लथपथ अमित ने रेंगते हुए आगे बढ़कर हथगोला फेंका और उन दोनों घुसपैठियों को मौके पर ही ढेर कर दिया। घुसपैठ नाकाम हो चुके थे, लेकिन लाल किले की परेड में कदमताल करने वाला वह जांबाज जवान, बर्फ की सफेद चादर पर हमेशा के लिए सो गया।

पूरे देश में देशभक्ति का उल्लास था। प्रभात फेरियाँ निकल रही थीं, लाउडस्पीकरों पर 'ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू' गूंज रहा था।

सुरभि के घर में सुबह से ही हलचल थी । पिता रामनाथ जी नया कुर्ता-पायजामा पहनकर टीवी के सामने बैठ चुके थे। सुरभि ने टीवी ऑन किया जहाँ लाल किले से सीधा प्रसारण शुरू हो चुका था।

लेकिन रसोई में खड़ी माँ कौशल्या देवी का हाथ अचानक काँपने लगा। सुबह का नाश्ता बनाते बनाते, माँ को अचानक ज़ोर-ज़ोर से हिचकी आने लगी।

"हिक्क... हिक्क..."

माँ ने मटके से पानी पीया, पर हिचकी रुकी नहीं। हर दूसरी-तीसरी सांस के साथ माँ का पूरा शरीर हिल जाता।

"अरे कौशल्या! इतनी हिचकी क्यों आ रही है तुम्हें?" रामनाथ जी ने कमरे से आवाज़ दी।

माँ अपने सीने पर हाथ रखे बाहर आईं । उनका चेहरा पीला पड़ चुका था। "न जाने क्यों... मेरा दिल बैठा जा रहा है," माँ ने काँपती आवाज़ में कहा। "मेरा अमित मुझे बहुत याद कर रहा है... वह मुझे पुकार रहा है रामनाथ जी! मुझे लग रहा है जैसे वह कह रहा हो— 'माँ, मुझे बहुत ठंड लग रही है... माँ!'"

सुरभि ने माँ को संभाला, "माँ! भाई आज इतने बड़े मंच पर खड़ा है। पूरा देश उसे देख रहा है, तो वह तुम्हें याद तो करेगा ही न! तुम परेशान मत हो।" माँ ने बहते आँसुओं को पल्लू से पोंछा और बुदबुदाई, " हाँ बिटिया... मेरा बेटा आएगा । उसने वादा किया था, वह आएगा..."



सुबह के 8:00 बज रहे थे। टीवी पर लाल किले से सेना की मार्च-पास्ट शुरू होने ही वाली थी। रामनाथ जी, माँ और सुरभि—तीनों टीवी स्क्रीन के सामने मारे खुशी के फूले नहीं समा रहे थे।

तभी— 'टिन-टिन... टिन-टिन!' घर के मुख्य दरवाज़े की घंटी बज उठी।

घंटी की आवाज़ सुनते ही तीनों के चेहरे पर खुशी की एक ज़बरदस्त लहर दौड़ गई। उनकी खुशी चार गुनी बढ़ गई!

"आ गया! मेरा भाई आ गया!" सुरभि मारे उत्साह के उछल पड़ी।

"देखा कौशल्या! मैंने कहा था न, वह हमें सरप्राइज देने सीधे घर पहुंचेगा!" सुरभि ने मुस्कुराते हुए बांहें फैलाकर एक ही झटके में लकड़ी का भारी दरवाज़ा खोल दिया—

पर सामने अमित मुस्कुराता हुआ खड़ा नहीं था।

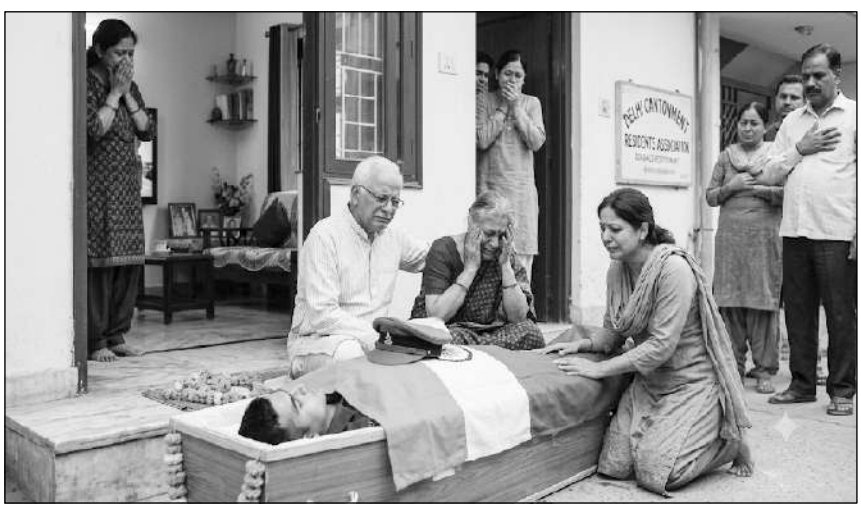
दरवाज़े के बाहर सेना के दो वरिष्ठ अधिकारी सिर झुकाए खड़े थे। उनके पीछे चार जांबाज सैनिकों के कंधों पर एक भारी लकड़ी का ताबूत रखा हुआ था। उस ताबूत के ऊपर हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा बड़े आदर से लपेटा हुआ था, और तिरंगे के नीचे... सफेद कफन में खामोश सो रहा था उनका अमित।

सुरभि की फैली हुई बांहें हवा में ही कांपकर गिर पड़ीं। एक पल में परिवार की सारी खुशियाँ मातम में बदल गईं।

कर्नल साहब ने रुंधे गले से कहा, "अंकल जी... अमित ने 13 अगस्त की रात सरहद पर देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया। वे लाल किले की परेड में तो नहीं पहुँच सके... पर भारत माता की गोद में अमर हो गए।"

रामनाथ जी बिना कोई शब्द बोले घुटनों के बल ज़मीन पर बैठ गए। सुरभि की चीख ने गाँव को हिला दिया, "अमित...! तू तो लाल किला जाने वाला था न! तू यहाँ... इस कफन में?"

जवानों ने नम आँखों से ताबूत का शीशा खोल दिया। अंदर अमित सफेद



कफन में लिपटा हुआ लेटा था—माथे पर शहादत का निशान और चेहरे पर असीम शांति।

माँ कौशल्या देवी घिसटते हुए ताबूत के पास पहुँचीं। सुबह से आ रही माँ की वह हिचकी, अमित के ठंडे कफन को छूते ही एक कलेजा चीर देने वाली चीख में बदल गई—

"मेरा बेटा आया... देख सुरभि, तेरा भाई आ गया!" माँ पागलों की तरह कफन के ऊपर से ही अमित के सीने पर गिर पड़ीं।

"तूने तो कहा था न अमित कि तू 15 अगस्त को आएगा? देख... तू आया तो सही! पर अपनी लाल किले वाली वर्दी पहनकर क्यों नहीं आया रे? तू इस सफेद कफन में क्यों लिपटकर आया? और यह तिरंगा... इसको तो तूने लाल किले पर सलामी देनी थी, इसे अपने शरीर पर लपेटकर क्यों ले आया?"

माँ अपनी साड़ी के पल्लू से कफन पर पड़े खून के निशानों को पोंछने लगीं। वे बार-बार अमित के माथे को चूमतीं और बिलखते हुए कहतीं— "मुझे सुबह से हिचकी आ रही थी... मुझे पता था तू मुझे पुकार रहा था! तू कह रहा था न— 'माँ, मुझे ठंड लग रही है!' देख, आज तू इतना ठंडा पड़ गया है कि तेरी माँ की ममता भी तुझे गर्मी नहीं दे पा रही..."

सुरभि ने काँपते हाथों से वह रेशमी राखी निकाली और कफन में लिपटे भाई के सीने पर, तिरंगे की छांव में रख दी। अमित लाल किले की प्राचीर पर कदमताल तो नहीं कर सका, लेकिन वह देश के लिए तिरंगे और कफन का सर्वोच्च गौरव बनकर इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए अमर हो गया।

देशभक्ति: नारों से कर्म तक

सारिका प्रीतम
गाज़ियाबाद,
उत्तर प्रदेश



"मन में ऐसी लौ जला कि मिट जाएँ, पर आँच न उम्मीदों पर आने पाएँ। अगर स्वर्ण-कलश भी हो हासिल, तो अपने जज़्बे और मेहनत से ही आए।"

सोशल मीडिया पर बनी 'कॉकरोच जनता पार्टी' मात्र 24 घंटे में 50 हजार और 5 दिनों में 10 लाख से अधिक लोगों को एक मंच पर ले आती है। कुछ ही दिनों बाद, सामाजिक कार्यकर्ता श्री सोनम वांगचुक के आमरण अनशन और कॉकरोच जनता पार्टी के आह्वान पर दिल्ली का ऐतिहासिक जंतर-मंतर हाल के वर्षों के सबसे बड़े विद्यार्थी आंदोलनों में से एक का गवाह बनता है। नीट प्रश्नपत्र लीक के विरोध में शुरू हुआ यह बहुचर्चित आंदोलन अंततः मांगें पूरी होने के कारण सफल माना गया।

बेशक, नीट जैसी महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा के प्रश्नपत्रों का बार-बार लीक होना बेहद संगीन मामला है। अब सवाल है—इसके लिए कौन जिम्मेदार है? भारत सरकार, सरकार में कार्यरत कुछ मंत्री या एन. टी. ए. के अधिकारी व कर्मचारी?



मेरा विचार है कि इसके लिए सबसे ज्यादा हम खुद जिम्मेदार हैं। जिम्मेदार हैं वे अभिभावक, जो अपने बच्चों के लिए प्रश्नपत्र खरीदते हैं। जिम्मेदार हैं वे कोचिंग संस्थान, जो परीक्षा से पहले इन प्रश्नपत्रों की मांग करते हैं। और जिम्मेदार हैं वे बच्चे, जो ऐसी कुत्सित गतिविधियों में शामिल होने की हामी भरते हैं। कुछ वर्गों की असीम लालसा ने इस गोरखधंधे को जारी रखा है।

अगर आप सच्चे देशभक्त हैं, तो ऐसे भ्रष्टाचार या किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार में लिप्त न हों। भ्रष्टाचार कैंसर की तरह है, जो हमारे देश को तेजी से पीछे धकेल रहा है। यदि हम सभी अपने कर्मों को ईमानदारी से निभाएँ, तो नारेबाजी की नौबत ही न आए।

मेरी राय में, निडर व सच्चे मन से और भ्रष्टाचार से मुक्त होकर अपनी जिम्मेदारियाँ निभाना ही सबसे बड़ी देशभक्ति है। अतः अपने कर्मों से देशभक्ति की मिसाल कायम करने का प्रयास करें। तत्पश्चात, यदि नारेबाजी की नौबत आए, तो बदलाव के अग्निपथ पर अग्रसर होने के लिए हम सभी निःसंदेह स्वतंत्र हैं।

हमारा प्यारा भारतवर्ष

किरण भंडारी

सुबह से ही रामप्यारी की हालत बिगड़ती जा रही थी। कल हाजमा खराब होने के साथ बुखार आ गया था और अब साँसें अटक रहीं थीं। नौकरी पर गया बुद्धन हवाई जहाज बंद होने के कारण लौट नहीं सकता था। बार बार फ़ोन आने पर बख्शीराम उसे दिलासा दे रहे थे कि माँ जल्दी ही ठीक हो जाएगी। अमजद मियाँ फूफी के लिए लाए सिलेंडर को लेकर आन पहुँचे। ताबड़तोप रामप्यारी की नाक में चौंगा लगा दिया। बख्शीराम देखते ही रह गए। रहमान तरकारी और पूड़ी अम्मा से ले आया। थोड़ी खिचड़ी भी। उसी ने मियाँ बीबी को दुलराते हुए खाना खिलाया। दोनों की आँखें भर आईं। मिस्टर मोनस्टके ने सुना तो अस्पताल जाते जाते क्षण भर बुद्धन के घर में हवा की तरह दाखिल हो ही गए। रामप्यारी को ड्रिप लगाई। ड्रिप में एक इंजेक्शन भी डाला और पत्नी रोज़ी को कुछ दवाइयों के बारे में समझा गए। टिक टिक करती घड़ी की तरह पड़ोसियों की आँखें भी एक दूसरे से पल पल मिलती जा रही थीं।

शाम होने लगी। रामदुलारी उठकर बैठ गई। रोज़ी ने ऑक्सीजन का मास्क भी निकाल दिया। कमजोरी थी, पर कम हो गई थी। दो कमरे का घर हलचल से भरा था। उमंग और खुशी जैसे कोने कोने से चहक रही थी। सामने स्क्रीन पर बाबा रामदेव एक्सरसाइज कर रहे थे। उन्हें देखते ही रामदुलारी ने बगल में रखी कोरोनिल और श्वसारी प्रवाही इशारे से माँगी। रोज़ी ने झट पानी के साथ दो दो गोलियाँ दे दीं। फिर अणु तेल भी दुलारी के इशारे पर डाल दिया। नगमा, अमजद, सलमा और रोज़ी एक्सरसाइज करने लगे। माली आया और उसने पूछा, "अम्माजी को लेकर चलना है क्या। गाड़ी ले आया हूँ।" रोज़ी ने कहा, "आ जा। अन्दर आ जा। देख तो। जब तू जाने को तैयार ही हो गया तो अम्माजी खुश हो होकर कैसे एक्सरसाइज करने लगी हैं साँस की।" नगमा खुश होकर हाथ नचाती हुई चहक उठी, "फूफी का सिलेंडर बेचारा बेचारा ही रह गया। ज़रा सी देर लगा फिर अम्मा ने भी झिड़क दिया। हा.. हा ..... हा।" सलमा हँस पड़ी और सलमा के साथ सब की खिलखिलाहट पूरे कमरे में गूँज उठी। अम्मा के चेहरे पर भी खुशी की सतरंगी आभा दिखाई दी। भरा पूरा पड़ोस भरा पूरा परिवार बना था।



जाने क्या सुझा मनकू माली को। उसके मोबाइल में सबके हँसते खिलखिलाते चेहरे सजीव हो उठे। उसने मोबाइल बाबूजी के हाथ में दे दिया और एक इशारा किया। बाबूजी भी समझ गए। अगली ही पल कमरे में बुद्धन की आवाज गूँजने लगी। वह एक पल भी सबसे दूर न रह सका। दूर अमेरिका के एक छोटे से कमरे में भारत सजीव हो उठा था और दूरियाँ झूँठी। सभी ने अपनी चेहरों पर मास्क सावधानी के तौर पर लगा रखे थे क्योंकि अपनी रक्षा तो करनी थी पर उनके नीचे वही वही चमड़ी, वही हड्डी खून और हाँ खुशी थी जिसमें भेद न था।

पंद्रह दिन ऐसे बीते कि जैसे पक्षियों के पर। शाम का वक्त था और दिन इतवार का। बक्शीराम रामप्यारी के हाथ की बनी गरमागरम सेवइयाँ, फैनी और खजूर ले कर चल दिए। सलमा, फूफी, अमजद मियाँ, रोज़ी, रहमान, मिस्टर मॉन्स्टके सबने छक के सब खाया। बख्शीराम कहते जाते थे ईद मुबारक मुबारक और हैप्पी क्रिसमस। हैप्पी दिवाली तो सब उनसे पहले ही कह चुके थे।

प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवाद : भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में



डॉ. कृष्णा मणिश्री
मैसूर, कर्नाटक

नारी विमर्श और भारतीय स्त्री-शक्ति:
प्रेमचंद के साहित्य में चित्रित नारी के संघर्ष और भारतीय परंपरा में वर्णित 'शक्ति तत्त्व' के बीच का अंतर

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

यह श्लोक बृहदारण्यक उपनिषद् से जोड़ा जाता है, लेकिन विद्वानों के अनुसार इसका प्रामाणिक पाठ महा उपनिषद् (Mahopanishad), अध्याय 6, श्लोक 71 में मिलता है।

भावार्थ :

"सभी लोग सुखी हों। सभी निरोगी और स्वस्थ रहें। सभी का जीवन शुभ और मंगलकारी हो। कोई भी व्यक्ति दुःख का भागी न बने। ॐ, शान्ति, शान्ति, शान्ति।"

अंत में तीन बार "शान्तिः" कहने की परंपरा का अर्थ है कि शांति तीन प्रकार से प्राप्त हो—

आध्यात्मिक (आध्यात्मिक/आन्तरिक) — मन, शरीर या व्यक्तिगत कष्ट।

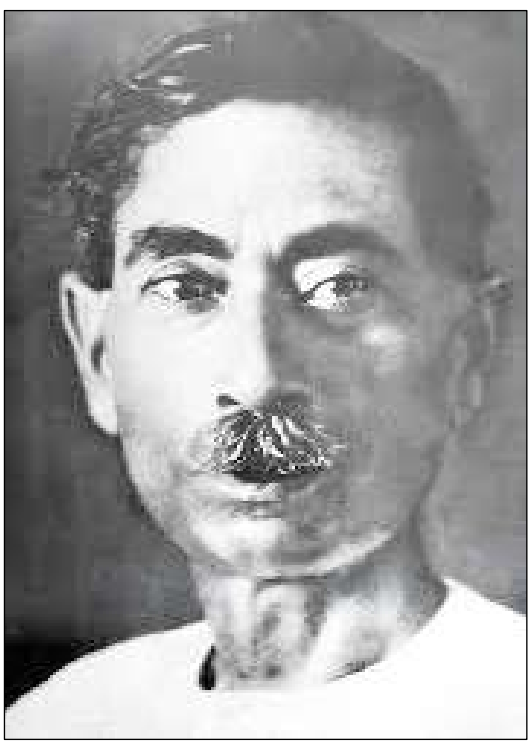
आधिभौतिक— अन्य प्राणियों, मनुष्यों या बाहरी संसार से उत्पन्न कष्ट।

आधिदैविक— प्राकृतिक या दैवी कारणों (जैसे आपदाएँ, मौसम आदि) से उत्पन्न कष्ट।

यह मंत्र भारतीय ज्ञान परंपरा से उद्धृत भारतीय दर्शन की सर्वजन-कल्याण की भावना का अत्यंत सुंदर और सार्वभौमिक उद्घोष है।

प्रेमचंद की कहानी 'बड़े घर की बेटी' के संदर्भ में नारी विमर्श और भारतीय स्त्री शक्ति और ज्ञान परंपरा के आलोक में मैं अपनी बात रखना चाहूंगी :

हिंदी साहित्य के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'बड़े घर की बेटी'



भारतीय समाज, परिवार और स्त्री के आदर्श स्वरूप को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। इस कहानी की मुख्य पात्र आनंदी भारतीय नारी के त्याग, धैर्य, विवेक, सहनशीलता और परिवार को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति का प्रतीक है। प्रेमचंद ने आनंदी के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि भारतीय स्त्री केवल गृहस्थी संभालने वाली नहीं, बल्कि परिवार और समाज को सही दिशा देने वाली एक सशक्त व्यक्तित्व भी है।

भारतीय स्त्री का सबसे बड़ा गुण उसकी सहनशीलता, संयम और क्षमा की भावना है। कहानी में जब परिवार के दो भाइयों के बीच विवाद उत्पन्न होता है, तब आनंदी क्रोध या प्रतिशोध का मार्ग नहीं अपनाती है। वह धैर्य रखती है, दोनों भाइयों को समझती है और समझदारी से परिस्थितियों को संभालती है । उसके व्यवहार में विनम्रता, सहिष्णुता और दूरदर्शिता दिखाई देती है । यही गुण भारतीय संस्कृति में स्त्री की वास्तविक शक्ति माने गए हैं। आनंदी अपने विवेक और प्रेम से परिवार को टूटने से बचाती है और यह संदेश देती है कि परिवार की एकता किसी भी व्यक्तिगत अहंकार से अधिक महत्वपूर्ण है।

यह कहानी भारतीय ज्ञान परंपरा को भी उजागर करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार सत्य, धर्म, करुणा, क्षमा, सहयोग और पारिवारिक सद्भाव है। आनंदी का आचरण इन्हीं मूल्यों पर आधारित है । वह अपने संस्कारों और नैतिक मूल्यों के कारण कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित निर्णय लेती है। उसका व्यवहार यह दर्शाता है कि वास्तविक शिक्षा केवल पुस्तकों से नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, अनुभव और संस्कारों से प्राप्त होती है। यही भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल तत्व है।

प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया है कि स्त्री की शक्ति बाहरी बल में नहीं, बल्कि उसके चरित्र, धैर्य और नैतिक साहस में निहित होती है। आनंदी किसी पर अपना अधिकार बलपूर्वक नहीं जमाती, बल्कि अपने प्रेम, संवेदना और बुद्धिमत्ता से सबका हृदय जीत लेती है। वह परिवार में शांति और सौहार्द स्थापित करती है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय समाज में स्त्री केवल परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि उसकी आधारशिला होती है।

आज के समय में भी 'बड़े घर की बेटी' की प्रासंगिकता बनी हुई है। आधुनिक समाज में जहाँ परिवारों में मतभेद और विघटन की समस्याएँ बढ़ रही हैं, वहाँ आनंदी का चरित्र हमें संवाद, सहनशीलता और पारस्परिक सम्मान का महत्व सिखाता है। साथ ही यह कहानी महिलाओं की नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता और सामाजिक भूमिका को भी सम्मान प्रदान करती है।

भारतीय परंपरा एवं भारतीय ज्ञान परंपरा में दुर्गा, काली, सरस्वती और लक्ष्मी केवल देवियाँ नहीं, बल्कि शक्ति, ज्ञान, समृद्धि तथा न्याय की प्रतीक हैं। प्रसिद्ध श्लोक—

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"

अंततः कहा जा सकता है कि 'बड़े घर की बेटी' केवल एक पारिवारिक कहानी नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री शक्ति और भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत चित्रण है। आनंदी का चरित्र यह संदेश देता है कि त्याग, प्रेम, विवेक, क्षमा और नैतिकता जैसे गुण ही परिवार, समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं।

प्रेमचंद एक कालजयी साहित्यकार हैं जिनकी रचनाओं में यथार्थवाद कूट-कूट कर भरा हुआ है। सिर्फ भारत देश ही नहीं प्रेमचंद जी की रचनाओं की प्रासंगिकता विदेशों में भी अपनी जगह बनाती जा रही है।

धन्यवाद!!





कहानी

प्रायश्चित



विवेकानंद विमल
मधुपुर, झारखंड

दिसंबर अपने अंतिम दिनों में था। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और महेश बाबू अपनी दिनचर्या के मुताबिक शाम को ट्रेन से उतर कर मुख्य सड़क की तरफ जा रहे थे। अँधेरा ढल चुका था और एक-आद टोटो यानि ई-रिक्शा ही सड़क पर दिखाई दे रही थी। महेश बाबू को आज सैलरी मिली थी तो सीधे ट्रेन से उतर कर हलवाई की दुकान पर पहुँच गए और पूरे पाँच सौ रुपए की काजू बर्फी, कलाकंद आदि मिठाइयाँ खरीद ली। अधिकतर सरकारी कर्मचारी, खासकर शिक्षकों की यह आदत होती है कि तनख्वाह वाले दिन घर मिठाईयाँ आ ही जातीं हैं और इससे घरवालों को भी पता चल जाता है कि आज मास्टर साहब को तनख्वाह मिली है। खैर, महेश बाबू हलवाई की दुकान से निकलते ही मेन रोड की तरफ भागे। कई टोटो (ई-रिक्शा) को हाथ देने के बाद एक रुका और वे उसमें बैठ गए। ठंड थी तो महेश बाबू गले में मफलर, सिर पर ऊनी टोपी और देह पर एक कीमती काली ब्लेजर पहने हुए थे। इतना सब कुछ होने के बावजूद हवा का झोंका उन्हें ठंड का एहसास कराने के लिए काफी था। मास्टर साहब ई-रिक्शा की मद्धिम चाल और सूँ...की आवाज को सुनते हुए अपने ख्यालों की दुनिया में जा ही रहे थे कि तभी ड्राइवर ने ब्रेक दबाई और महेश बाबू सचेत हो गए। सामने देखा तो एक मजदूर जैसा व्यक्ति, जो एक हाथ में कुछ सामान लिए हुए था और दूसरा हाथ सामने उठाए हुए खड़ा था। टोटो के रुकते ही वह भी उसमें सवार हो गया और मास्टर साहब के सामने वाली सीट पर आकर बैठ गया।

उसने अपना झोला भी उठाकर ऊपर रखा। प्लास्टिक की खड़खड़ाती आवाज से मास्टर साहब को लगा कि शायद कुछ नए कपड़े हों। महेश बाबू ने हल्की रोशनी में ऊपर से नीचे तक उसे निहारा और समझने की कोशिश की कि यह आदमी कुछ विचित्र-सा जान पड़ता है। हालांकि, हुलिए से तो वह मजदूर जैसा दिखाई पड़ रहा था, पर शरीर की गठान सशक्त थी।



इतनी कड़ाके की ठंड में भी उसने बस एक फटी शर्ट और भीतर एक थर्माकोट पहन रखी थी। सिर का भाग खाली था। गाड़ी के चलने पर हवाओं के थपेड़ों को सहने के लिए उसने अपने दोनों पैर सटा रखे थे, हाथ सीने से चिपकाकर कसकसाकर बांध रखा था मानो हवा का एक झोंका भी छाती तक पहुँचने नहीं देगा। पूरा देह पत्थर-सा कठोर होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ठंड तो ठंड होती है और उसे रोकने के लिए शरीर के कसावट की नहीं, गर्म कपड़ों की जरूरत होती है जो उसके पास नहीं थे।

महेश बाबू को एक पल को इच्छा हुई कि अपना ब्लेजर उतार कर उसे दे दें। वे यह परोपकार तो करना चाहते थे पर बटन खोलते ही ठंडी हवाओं की चुभन को महसूस कर उन्होंने अपना विचार बदल लिया। लेकिन मन ही मन खुद को कोसते भी रहे और खुद को उसका हाल-चाल पूछने से रोक नहीं पाए। महेश बाबू ने मजदूर से पूछा-क्यों भाई लगता है कहीं मजदूरी करते हो!"

हाँ, सर। मजदूरी का ही काम है, चावल के स्टोर हाउस में बोरिया गिराने और लादने का काम करता हूँ। - मजदूर ने उत्तर दिया।

"कितना कमा लेते हो दिन के?"

"ये तो बोरियों की गिनती पर है। किसी दिन पाँच सौ भी और किसी दिन सौ रुपये भी नहीं।

"एक बोरी उठाने का क्या मिलता है?"

"जी दस रुपये"

महेश बाबू को सुन कर थोड़ा अजीब लगा। वे सोचने लगे कि एक बोरी का दस रुपया मिलता है यानि 50 बोरियाँ उठने पर 500 रुपए मिलते होंगे। उफ्फ! बड़ी मेहनत का काम है! महेश बाबू की उत्सुकता बढ़ गई। उन्होंने फिर पूछा - "वैसे बड़े दमखम वाले लगते हो; इतनी ठंड को ऐसे ही झेले जा रहे हो, न कोई मफलर, न स्वेटर!"

मजदूर ने उत्तर दिया- "क्या करें साहेब, गरीबी सब कुछ झेलना सिखा देती है। अपमान झेलने से बेहतर है, ठंड ही झेल ली जाए!"

महेश बाबू चौकें - "अपमान! कैसा अपमान....?" पर उससे सीधा कुछ नहीं पूछ सके। उन्होंने बात घुमाते हुए कहा- "अरे, इस झोले में क्या है, लगता है कुछ नए कपड़े खरीद कर ले जा रहे हो! पर किसके लिए और खुद के लिए कुछ नहीं खरीदा क्या?" महेश बाबू ने एक साथ कई सवाल दाग दिए।

"साहेब, बिटिया की शादी है, उसी के लिए कपड़े खरीदा हूँ। मैं तो जैसे-तैसे जी लूँगा, ठंड भी झेल लूँगा। पर शादी में इज्जत बचाने के लायक तो खर्च करना ही होगा। मैं कर्ज में डूबा हूँ कि ठंड में मर रहा हूँ, इससे किसे फर्क पड़ता है? समाज तो यही देखेगा कि बेटी की शादी कितने धूमधाम से की। बात भी सही है मैं अपने ही सुख देखता रहूँगा तो बेटी के सुख के लिए कौन सोचेगा....?" - मजदूर ने अपनी व्यथा सुनाई।

महेश बाबू सन्न रह गए। वे सारी बात समझ चुके थे। वे जान चुके थे कि घूँट-घूँट गरीबी को पीने वाला व्यक्ति एक-एक पाई की कीमत जानता है। उसका हिसाब-किताब किसी बनिए से भी बेहतर होता है। वह समझता है कि बाजार की कौन-सी वस्तु उसके लिए बनी है और कौन-सी नहीं बनी!

महेश बाबू यह सब सोच ही रहे थे कि रिक्शे वाले ने कहा - "सर, आपका घर आ चुका है? कहाँ खोए हुए हैं? और आगे जाना है क्या?" महेश बाबू झट से अपनी ख्यालों की दुनिया से बाहर आ गए और टोटो से उतरते हुए 20 रुपये चालक को थमा दिए। जाते-जाते उन्होंने मजदूर से कहा - "चलो भाई फिर मिलता हूँ, बिटिया का ब्याह खूब धूमधाम से करना! चलता हूँ..." इतना बोलकर महेश बाबू घर की तरफ बढ़े और टोटो अपने आगे के सफर की तरफ। फिर अचानक उन्हें ख्याल आया कि उन्होंने तो उस मजदूर से उसका नाम पूछा ही नहीं- "ओह! बड़ी भूल हुई। सारी बातें तो जान ली पर बस नाम पूछना ही भूल गया। पता नहीं कभी मिले न मिले....."

महेश बाबू ने दरवाजे की घंटी बजाई। भीतर से उनकी पत्नी रेश्मा आई और दरवाजा खोला। मास्टर साहब ने मिठाई का डब्बा रेश्मा को दिया और बिना कुछ कहे सीधे अपने कमरे में चले गए। उनके मस्तिष्क में अभी भी उस मजदूर का चेहरा घूम रहा था। उसकी कारुणिक छवि उनके मन को गहराई से प्रभावित कर चुकी थी। उस रात महेश बाबू खाना खाकर चुपचाप अपने कमरे में जाकर सो गए। रेश्मा के लिए यह सहज नहीं था। उसने अपने पति को सदा प्रफुल्लित और मनोरंजन पसंद व्यक्ति के रूप में जाना था। लेकिन आज मास्टर जी का व्यक्तित्व अंतर्मुखी प्रतीत हो रहा था। रेश्मा इस बात को समझ रही थी, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। वह समझ गई कि अवश्य कोई बात महेश बाबू के मन में परेशान कर रही है।

सुबह जब महेश बाबू उठे तो मन अभी भी भारी था। स्नान आदि करके उन्होंने भोजन किया और फिर स्कूल जाने के लिए तैयारी करने लगे। पुराने कपड़े गंदे हो चुके थे। अतः नए के लिए उन्होंने रेश्मा से पूछा-

"अरे, सुनती हो जी!"

"हाँ, कहिए"

"मेरा वो पुराना धारीदार स्वेटर नहीं मिल रहा।"

"वह तो कल मैंने धो दिया था। आपने पिछले हफ्ते पहना था उसे लेकिन धुल नहीं पाया था, इसलिए कल धो दिया। कोई बात नहीं, आप दूसरा ब्लेजर पहन लीजिए!"

"कैसी बात करती हो, कल ही तो मैं ब्लेजर पहनकर गया था! क्या रोज-रोज ब्लेजर ही पहनकर जाऊँ...?"

"अरे तो क्या हुआ? कल दूसरा ब्लेजर था, आज दूसरा है। रंग भी अलग है।"

"पर है तो ब्लेजर ही न! स्कूल में लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे!"

"ठीक है फिर ब्लू वाली नई स्वेटर पहन लीजिए, आपके आज की सफेद शर्ट पर अच्छी खिलेगी...."

"क्या मजाक करती हो, तुम्हें भी पता है मुझे वह स्वेटर पसंद नहीं!" - महेश बाबू ने गुस्से से कहा।

रेश्मा भी अब इस बेवजह के बहस से खीज रही थी। उसने अपने आप को शांत रखने की कोशिश करते हुए कहा-

"तो ऐसा क्यों नहीं करते....आज वह कत्थई रंग की जैकेट पहन लीजिए, वैसे भी ठंड ज्यादा है। ठंड से बचाव भी होगा और कुछ अलग भी हो जाएगा।"

महेश बाबू ने गुस्से से कहा- "क्या पागल हो गई हो...? क्या बिल्कुल समझ खत्म हो गई है तुम्हारी...? आज विद्यालय में क्रिसमस डे मनाया जाना है और मैं जैकेट पहने कर जाऊँ! कोई दूसरा दिन होता तो पहन भी सकता था! आज तो बिल्कुल नहीं ... आज सारे टीचर या तो ब्लेजर पहनेंगे या स्वेटर।"

रेश्मा अब परेशान हो चुकी थी, उसने झल्लाते हुए कहा-

"तो जो पहनना है पहनिए! मुझसे कुछ न पूछिए! कुछ लोगों को भगवान जरूरत से ज्यादा दे देते हैं, फिर वे उनका महत्व नहीं समझते! जिनके पास ये कपड़े नहीं है न, उनसे जाकर पूछिए...क्या कीमत है इन कपड़ों की! "

महेश बाबू को धक्का-सा लगा। वे रेश्मा से नजरें न मिला सके। आखिर वे भी तो शिक्षक थे। शिक्षक की गरिमा को भली-भांति जानते थे और ऐसा ज्ञान तो वे अक्सर बच्चों को दिया करते थे, पर शायद खुद के जीवन में उसे खुद ही नहीं उतार पाए थे। लेकिन रेश्मा के इन कटु किन्तु सच्चे शब्दों से कुछ और भी हुआ था। महेश बाबू के मन में अनायास ही उस मजदूर का ख्याल आ गया, जिसके पास ठंड से बचने के लिए एक ढंग का कपड़ा तक नहीं था। मास्टर जी सोचने लगे कि आज अगर वह फिर से बाजार गया होगा तो क्या उसने कपड़े बदले होंगे? शायद नहीं...! यह सोचते ही उनके मन में अजब-सा वैराग्य जाग उठा और उन्होंने पिछले दिन वाला ब्लेजर दुबारा शरीर पर डाल लिया और निकल पड़े। रेशमा ने देखा तो वह चौंक उठी। महेश बाबू ने शायद नौकरी मिलने के बाद से पहली बार कोई कपड़ा दूसरे दिन लगातार पहना था। रेश्मा ने आवाज देने की कोशिश की लेकिन महेश बाबू उसे अनसुना कर घर से बाहर निकल गए।

घर से बाहर निकलकर महेश बाबू सवारी गाड़ी का इंतजार करने लगे। उन्हें वह पुराना ब्लेजर पहनना ठीक तो नहीं लग रहा था पर किसी तरह वे खुद को समझाने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें पहली बार यह अनुभव हुआ कि वे अपनी इच्छाओं के समक्ष कितने बौने हैं और इच्छाएँ किस प्रकार मनुष्य को गुलाम बना लेती हैं। वे जानते थे कि एक ब्लेजर दो दिन क्या हफ्ते भर भी आसानी से पहना जा सकता है, लेकिन जब वह ब्लेजर या कोई अन्य कपड़ा खुद के लिए नहीं अपितु दूसरों से अलग दिखने के लिए या स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने के लिए पहना जाए तो दो दिन भी पहनना कठिन हो जाता है। महेश बाबू इसी दोहरे मनोभाव की स्थिति में जी रहे थे। एक तरफ उनके भीतर वैराग्य जाग रहा था, दूसरी तरफ नए और धुले कपड़ों की तरफ उनका रुझान उन्हें परेशान कर रहा था। एक तरफ उनके कान और मस्तिष्क में रेश्मा की वह बात गूंज रही थी, दूसरी तरफ उनका मन अपने नखरे दिखा रहा था। महेश बाबू अपने विचारों का मन ही मन निष्कर्ष निकाल ही रहे थे कि उन्हें सामने से एक टोटो आता दिखा। महेश बाबू ने हाथ दिया और उसपर सवार हो गए। देखा तो यह वही टोटो था जिसमें वे कल रात बैठकर आए थे।

महेश बाबू ने ड्राइवर से तुरंत ही पूछ लिया- "अरे भाई, कल रात तो तुम ही मुझे यहाँ तक छोड़ गए थे न?"

"जी सर, मैं ही था, आपकी स्मरण शक्ति तो बहुत तेज है! एक बार देखा, वह भी रात में और याद रख लिया। वाह!" - ड्राइवर ने अचंभित होकर उत्तर दिया।

"अरे, वह सब छोड़ो! यह बताओ, वह जो एक और आदमी कल तुम्हारी गाड़ी पर सवार था, उसके विषय में कुछ जानते हो? कल कहाँ छोड़ा था तुमने उसे? नाम-पता कुछ मालूम है?

" अच्छा! पूरब.....पूरब नाम था उसका। हाँ, याद है.... बड़ा भला आदमी था...मेरे घर के पास ही घर है उसका। यहाँ से करीब 5 किलोमीटर दूर। वैसे गरीब था पर दिल का साफ आदमी था।"

" था....? था से क्या मतलब है तुम्हारा? ऐसा क्यों बोल रहे हो?" महेश बाबू ने अचंभित होकर पूछा।

"अरे सर! गरीब आदमी था, कल रात ही ठंड लगने से गुजर गया...."

महेश बाबू यह सुनकर सन्न रह गए। उन्होंने ऐसी किसी घटना की कल्पना भी नहीं की थी। उनकी आँखें भर आई। बड़ी हिम्मत जुटा कर उन्होंने कहा -

"लेकिन कल तो पूरब की बिटिया का ब्याह होने वाला था। मैंने कल पूछा था उससे। वह बेटी के लिए कपड़े खरीदकर ले जा रहा था। कल तक तो वह भी बिल्कुल स्वस्थ लग रहा था।"

"हाँ साहब, इसी बात का तो दुख है। जहाँ बेटी की डोली उठनी थी, वहाँ बाप की अर्थी उठ गई। काश! उसने जो कपड़े अपनी बेटी के लिए खरीदे थे, उसी पैसे से एक-आद मोटा कपड़ा खुद के लिए भी खरीद लिया होता तो आज ऐसा न होता।"

महेश बाबू को फिर से झटका लगा। वे समझ गए कि कल रात की कड़ाके की ठंड के कारण ही यह दुर्घटना हुई। उनका मन हीन भावना से भर गया। उनकी नजरें अपने ब्लेजर पर चलीं गई। उनके मन में बार-बार यही बात कौंध रही थी कि अगर

कल उन्होंने अपनी ब्लेजर पूरब को दे दी होती तो शायद उसकी जान बच जाती। उनका थोड़ा-सा संकोच और ब्लेजर के प्रति उनका मोह पूरब की जान ले गया। मास्टर साहब का हृदय आत्मग्लानि की अग्नि से धधक उठा। पूरब का वह कांतिहीन मुख बार-बार उनके नयनों में उभर रहा था। उनके लिए यह पीड़ा असहनीय-सी हो गई। वे खुद को ही दोषी मानने लगे और इस दोष से मुक्ति की राह खोजने लगे थे। अब वे प्रायश्चित करना चाहते थे। तभी अचानक उन्हें पूरब के परिवार की चिंता हुई। उन्होंने ड्राइवर से पूछा -

"भाई, पूरब के परिवार में और कौन-कौन है? उसका कोई बेटा है या नहीं?"

"हाँ, बेटा तो है पर कोई 10-12 साल का। उससे पहले दो बेटी है, बड़ी वाली का ब्याह होना था जो अभी 18-19 की होगी।

"ससुराल वाले कैसे हैं? उनसे ठीक-ठाक बनती है या नहीं!"

"इतना तो नहीं मालूम सर, लेकिन आज भोर में अंत्येष्टि के लिए गाँव के बाहर के भी लोग आए थे। शायद ससुराल वाले भी हों..."

"अच्छा, फिर परिवार के लिए थोड़ी आसानी हो जाएगी..."

बातें करते-करते टोटो स्टेशन आ गया था पर महेश बाबू को स्कूल जाने की इच्छा बिल्कुल नहीं हो रही थी। उनके मन में ठीक वैसे ही भाव आ रहे थे जैसे किसी अपने के गुजर जाने पर हो। कोई चीज थी जो उन्हें पीछे की तरफ खींच रही थी। अंततः उन्होंने निर्णय किया कि वे पूरब के घर जाएंगे। उन्होंने झट से अपने विद्यालय में फोन किया और एक दिन की छुट्टी ले ली। फिर ड्राइवर से कहा और पूरब के घर की ओर चल दिए।

पूरब के घर पहुँचे तो देखा चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। परिजन अंत्येष्टि कर कुछ देर पहले ही वापस लौटे थे। शादी की भोज के लिए बना पंडाल खाली था। भोज के लिए बना भोजन यों ही रखा था। मिट्टी का घर था और खपरे की छत थी, दीवार के एक भाग की मोटाई बरसात के पानी के कारण आधी रह गई थी, जिसे देखकर यों लगा मानो वह अभी गिर पड़ेगी। आवाज देने पर सबसे पहले पूरब का बेटा आया। महेश बाबू ने उसके सिर और फिर पीठ पर हाथ रखते हुए उसे थोड़ी सांत्वना दी। उसके बाद पूरब की पत्नी रेखा के पास पहुँचे। वह बात करने की अवस्था में न थी। रेखा के भाई से बातचीत कर पता चला कि घर की हालत बहुत दयनीय थी। बेटी का ब्याह होना था पर कोई ढंग का इंतजाम न हो सका था। दहेज के लिए पूरे पैसे भी जमा नहीं हो पाए थे। उस दिन पूरब न जाने किस-किस से उधार मांग कर अपनी बेटी के लिए दुल्हन का लाल लहंगा और श्रृंगार का समान लेकर आया था। खुद के लिए उसने कुछ भी न खरीदा। पत्नी भी बीमार रहती थी, जिसमें उसकी कमाई का कुछ हिस्सा चला जाता था। उसके पास केवल दो जोड़े कपड़े थे, जिसे वह बदल-बदल कर पहनता था।

महेश बाबू पूरब की अवस्था की कल्पना करके मन ही मन बिलख रहे थे। उन्हें रेश्मा की वह बात फिर से याद आ गई। वे पूरब और अपनी स्थिति की कल्पना कर सोचने लगे कि- "किसी के पास इतना कुछ होता है कि वह सोचता रहता है कि आज क्या पहनें और किसी के पास इतना कम होता है कि वह भी सोचता है कि आज क्या पहने..! दोनों ही वाक्यों के शब्दों में बहुत अंतर नहीं है पर ये अर्थ में बिल्कुल विपरीत हैं..." महेश बाबू दोनों ही अवस्थाओं में रखकर खुद को देख रहे थे। उनका मन एक भीषण विरोधाभासी स्थिति में था। आज तक उन्होंने गरीबी को पढ़ा था, पढ़ाया था पर इतने करीब से कभी महसूस नहीं किया था। आज पहली बार वे पूरब के माध्यम से गरीबी को जी रहे थे और उसकी भयावहता को देख रहे थे। उनके मन में एक भूचाल आ चुका था। विचारों की लहरें मस्तिष्क के सागर में हिलोरे मार रहीं थी। एकाएक महेश बाबू ने खुद से कहा- "नहीं! नहीं! मैं केवल तमाशा नहीं देख सकता। पूरब की यह जो दशा हुई उसका जिम्मेदार मैं भी हूँ। मैंने ही उस रात उसे अपना ब्लेजर नहीं दिया, जिसके कारण यह सब हुआ और यदि मैं जिम्मेदार हूँ तो मुझे ही पूरब के परिवार को इस हालात से निकलना होगा। मुझे प्रायश्चित करना होगा!"

महेश बाबू यह सब सोच ही रहे थे कि तभी पूरब की पत्नी रेखा वहाँ आ गई। सूटबूट में महेश बाबू को देखकर उसने सोचा कि यह अजनबी कौन है! उसने भारी आवाज में महेश बाबू को टोका- "माफ करिए! हम आपको पहचान नहीं पाए!"

"मैं इंश्योरेंस कंपनी से हूँ।" - महेश बाबू ने थोड़ी देर सोचकर बोला।

रेखा गरीब तो थी पर अनपढ़ नहीं। उसने 12वीं की कक्षा तक पढ़ाई की थी। उसे जीवन और पैसों से जुड़ी ये छोटी-मोटी जानकारियाँ थी। उसने तुरंत कहा - "पर हमने तो ऐसा कोई इंश्योरेंस नहीं करवाया!"

महेश बाबू थोड़ा सहमे । उन्हें ऐसे प्रतिउत्तर की कोई उम्मीद न थी । उन्होंने बड़ी भद्रता के साथ रेखा से कहा-

"यह बात केवल मैं और पूरब जानते हैं । वह पैसे बचा-बचा कर हर महीने किस्त की रकम जमा किया करता था । उसने यह आप दोनों के नाम से किया था। उसे भय था कि कहीं आपको कुछ हो न जाए क्योंकि आपकी तबीयत खराब



रहती थी । मेरे आग्रह पर उसने आपके साथ अपना नाम भी जुड़वा लिया था । मुझे किसी तरह पूरब के देहांत की खबर मिली तो मैं यहाँ आया । पूरे एक लाख रुपए का इंश्योरेंस है।"

रेखा अब निरुत्तर हो गई । उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह खुश हो या रोए। उसे पूरब के अथाह प्रेम की अनुभूति हुई। उसकी आँखों से झर-झर अश्रु बह निकले। सिर पर हाथ मारते हुए वह बोली- "हाय रे मेरा भाग्य! हाय रे मेरा पूरब! जीते जी हम उसको कोई सुख न दे पाए और वह मरते-मरते भी हमारा कल्याण कर गया।"

महेश बाबू ने ढाढस बंधाते हुए रेखा से कहा - "आप धीरज रखिए । पूरब जो कर सकता था वह करके चला गया। अब आप सबकी जिम्मेदारी है कि उन पैसों से पूरब का श्राद्ध और बिटिया का ब्याह अच्छे ढंग से हो जाए, इसी से पूरब की आत्मा को शांति मिलेगी । होनी को तो कोई टाल नहीं सकता लेकिन हम उस स्थिति को अपनी कोशिशों से कुछ बेहतर तो कर ही सकते हैं । पूरब चला गया लेकिन उसने इतना इंतजाम कर दिया है कि सारा कार्यक्रम ढंग से हो जाए.... मैं अभी चलता हूँ, थोड़ी देर में पैसे लेकर लौटूँगा...."

टोटो ड्राइवर वहीं बैठा सब सुन रहा था, वह सबकुछ समझ गया । उसने तुरंत ई-रिक्शा घुमाई और महेश बाबू उसपर सवार होकर घर पहुँच गए । घर पहुँचकर महेश बाबू ने सारी बात रेश्मा को बताई । रेश्मा थोड़ी हैरान तो थी पर उनके विचार से सहमत थी । उसे अपने पति और उनके बदले हुए व्यक्तित्व पर गर्व हुआ । वह समझ गई कि सुबह जो व्यक्ति तुनककर घर से बाहर निकला था, यह वही नहीं है। महेश बाबू का यह रूप नया था । लेकिन सत्य यह भी था कि इस बदलाव में रेश्मा का भी उतना ही योगदान था जितना स्वयं महेश बाबू का । रेश्मा ने वे कठोर शब्द न बोले होते तो महेश बाबू कभी दुबारा वही ब्लेजर न पहनते, न उन्होंने पूरब के दयनीय हालात की कल्पना की होती।

इसके बाद रेश्मा ने स्वयं जाकर अलमारी से 25-25 हजार रुपए के चार बंडल निकालकर मास्टर साहब को दे दिए, जो उसने खुद के जेवर बनवाने के लिए रखे थे । सारी कहानी सुनने के बाद आज रेश्मा को अपने श्रृंगार से अधिक पूरब की बेटी के हाथ पीले करने की चिंता हो रही थी । उसके लिए यह त्याग नहीं बल्कि किसी अपने को दिया सहयोग जैसा था । महेश बाबू को भी यह सब देखकर अपनी पत्नी पर गर्व हुआ । अधिकतर स्त्रियाँ हर चीज से समझौता कर सकतीं हैं, परन्तु उन्हें अपने श्रृंगार की वस्तुओं से कोई समझौता करना नहीं आता । इसलिए यह केवल महेश बाबू की ही नहीं बल्कि यह रेश्मा की भी स्वयं के मन पर जीत थी। महेश बाबू के हर्ष का ठिकाना न रहा । उन्होंने रेश्मा के इस दयावान स्वरूप को देखकर उसे गले लगा लिया और चेहरे पर एक मुस्कान लिए सीधे पूरब के घर की ओर निकले । वहाँ पहुँचकर उन्होंने एक लाख रूपये पूरब की पत्नी को दे दिए । इस प्रकार महेश बाबू का प्रायश्चित पूर्ण हुआ और पूरब का श्राद्ध तथा उसकी बिटिया का ब्याह भी संपन्न हुआ।

भारतीय संस्कृति - सामासिक संस्कृति

सावित्री मलिक

आज हिंदुस्तान में भारतीयता, भारतीय संस्कृति का बड़ा चर्चा है। क्या है भारतीयता? क्या है भारतीय संस्कृति? पहले हम भारतीयता की बात करें। इसका जवाब यदि हम ईमानदारी से दें तो बड़ी हिम्मत से काम लेना होगा। एक बात यहाँ बिल्कुल साफ है कि हिंदूवाद भारतीयता का पर्याय नहीं है। भारतीयता की कोई भी कल्पना जो इस देश के किसी भी वर्ग, भाषा या प्रांत के उचित स्थान को नकार करके चलती है बेमानी है। उसे तो सबको समेटकर साथ लेकर चलना होगा। सबके साझे हितों पर क़ायम जनता की एकता ही भारतीयता की पहचान है।

भारतीय संस्कृति :- समाज में प्रचलित साहित्य, धर्म, रीति-रिवाजों, प्रथाओं, परंपराओं और जीवन दर्शन का नाम है संस्कृति। भारत में यूनानी, ईरानी, क़ुरान, अरबी, तुर्की और यूरोपीय आदि आए और अपनी संस्कृति साथ लाए। ये सभी संस्कृतियाँ घुल- मिलकर एक मिश्रित यानी सामासिक संस्कृति बन गई हैं जिसका नाम है भारतीय संस्कृति।

भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है विविधताओं वाले देश में संस्कृति के मूल तत्व सभी स्थानों पर एक हैं। दर्शन और भक्ति ने भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँध रखा है। वह भारतीय संस्कृति ही थी जिसमें से 'सर्वे भवंतु सुखिनाम' एवं 'वसुधैव कुटुंबकम' की आवाज़ उठी थी। इसी संस्कृति की प्रशंसा में कहा गया था—

जगे हम लगे जगाने विश्व
लोक में फैला दिया आलोक
व्योम तम पुंज हुआ तब नष्ट
अखिल संस्कृति हो उठी अशोक

जिसने अज्ञान के तम में खोए विश्व को अपनी ज्ञान ज्योति से जगाया वह हम ही थे और वह हमारा ही देश था जिसने जयशंकर प्रसाद को भावुक बनाकर कहलवाया—

"अरुण यह मधुमेह देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा"

जिनकी मिट्टी में सहस्त्रों साल पहले कबीर पैदा हुए, सूफी कवियों ने जन्म लिया। कबीर का उद्घोष गूंजा—

जाति-पाति पूछे नहीं कोई
हरि को भजे सो हरि का होई

उस मानवतावादी प्रेम, मानवतावादी मूल्य की आवाज़ आज भी जनता अपने दिल में सजाए हुए है। जहाँ फिरक़ा परस्ती और जुनूनी ताक़तें ख़ून पर उतारू हो जाती हैं वहीं जनता के दिल में इंसानी हमदर्दी और सौहार्द्र बना रहता है। इसीलिए तमाम उकसावों के बावजूद भी हम एक-दूसरे के प्रति सहिष्णु बने हुए हैं।

इस साझी संस्कृति को बनाने में हिंदू, मुस्लिम, सिख सभी का योगदान रहा है। आज ज़रूरत है इस एकता को पहचान कर इसे और भी मज़बूत बनाने की।

हमारी जिस भारतीय संस्कृति का बखान सांप्रदायिक ताक़तें करती हैं उसमें भेदभाव, असमानता को न्याय संगत ठहराया जाता है। मनुस्मृति, चाणक्य नीति शास्त्र, बाल्मीकि रामायण या तुलसीदास की रामायण किसी भी प्राचीन ग्रंथ को उठाकर पढ़ें उनमें नारी की स्थिति दासी से ऊपर नहीं। शूद्रों को मनुष्यों का दर्जा नहीं दिया गया। आज अनेक भारतीय संस्कृति के झंडाबरदार स्त्रियों की समानता के सवाल को वास्तविक न मानकर पश्चिमी भौतिकवाद का असर मानते हैं। सती प्रथा हिंदू परंपरा की सबसे क्रूर अभिव्यक्ति है। इस बर्बर और मानव विरोधी प्रथा के ख़िलाफ राजा राममोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने लगभग 150 साल पहले संघर्ष किया था और सफल भी रहे थे।

आज हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे लौट रहे हैं। जिस सामाजिक बदलाव के लिए हमने 19वीं सदी में संघर्ष की शुरुआत की थी उसे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी जारी रखने की ज़रूरत थी, लेकिन हमारे राष्ट्र के कर्णधारों को ज़रूरत थी अपनी सत्ता की रक्षा की। इसलिए उन्होंने इन बुराइयों के ख़िलाफ क़ानून बनाने के बाद भी समझौता परस्ती और अवसरवाद के नए युग की शुरुआत की।

पुनरुत्थानवादी आज देश के हर संकट का कारण विज्ञान व आधुनिक विकास को बताते हैं। वे धर्मनिरपेक्षता

को भी भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल मानते हैं। इन्हीं लोगों ने भारतीय परंपरा की सर्वाधिक विकृत और मानव विरोधी अवधारणाओं को आदर्शीकृत और महिमा मंडित करने का अभियान शुरू किया। उन्हीं की इस पलायनवादी सोच ने शासक वर्ग के लिए आधार भूमि बनाने का काम किया । यही कारण रहा कि जनसंचार माध्यमों ने इन विचारों के फैलाव में कोई कसर नहीं



छोड़ी।

आकाशवाणी और दूरदर्शन ऐसे कई ज्वलंत प्रश्नों पर जो सारे देश को आंदोलित कर रहे होते हैं धार्मिक कठमुल्लाओं के भय से निरपेक्ष बने रहते हैं। ये उम्मीद तो हम उनसे कर ही नहीं सकते कि रूढ़ मान्यताओं को वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषित करके उनके बारे में फैले भ्रम का यह निवारण कर देंगे । उल्टे इन संचार माध्यमों ने संस्कृति और इतिहास की मनमानी व्याख्या करके लोगों को गुमराह किया है। भूत-प्रेत और पुनर्जन्म की कल्पित कहानी छाप कर या दिखाकर लोगों को भाग्यवादी बनाने का काम किया है।

अब रही बात भारतीय संस्कृति को सिर्फ हिंदुओं की धरोहर मानने की, इसका सीधा उत्तर है—

समस्त विश्व के मानव एक हैं, मानव संस्कृति का विभाजन नहीं किया जा सकता। महान कलाकार एवं वैज्ञानिक सबके साझे होते हैं।

क्या हिंदी साहित्य में मुसलमान कवि और कवयित्रियों के योगदान को हम भूल सकते हैं । भक्ति काल की निर्गुण धारा की दोनों प्रमुख शाखों— ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी के प्रतिनिधि कवि मुसलमान ही थे बल्कि प्रेममार्गी शाखा तो एक प्रकार से मुस्लिम कवियों की ही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र के मुँह से इन्हीं कवियों के लिए निकल पड़ा था—

इन मुसलमानों हरिजन पै
कौटिक हिंदुन वारिए

जो आज हिंदू-मुस्लिम को अलग करने की बात करते हैं उनके लिए एक उदाहरण काफी है 'ताज'।

ताज नामक कवयित्री मुसलमान थी जो कृष्ण भक्ति से प्रभावित होकर गाया करती—

नंद के कुमार कुर्बान तेरी सूरत पे
हौं तो मुगलानी हिंदुआनी हो रहूंगी मैं

अमीर खुसरो, मोहम्मद जायसी, रहीम, रसखान, कबीर इन सब को निकाल कर हमारे हिंदी साहित्य में बचेगा क्या? आधुनिक युग में भी हिंदी-उर्दू मिश्रित रूप को कई कवियों ने अपनाया है जिनमें इक़बाल का 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' काफी लोकप्रिय हुआ। यह है हमारी संस्कृति का अमर संदेश, अमर प्रेम और असली स्वरूप।

समाज में स्वस्थ मूल्यों, मान-मर्यादाओं के विकसित हुए बिना जो संस्कृति जन्म लेती है वह एक ऐसी बांझ संस्कृति होती है जिसमें मंदबुद्धि के तिगड़म बाज़ फलते-फूलते हैं । ज़रूरत होती है ऐसी संस्कृति को नई ऐतिहासिक परिस्थितियों में परिभाषित करने की । आज वैसे भी मनुष्य ने आदर्श की उस पुरानी परंपरा से काफी आगे तक की यात्रा तय कर ली है। हम अपनी संस्कृति के उसी हिस्से को अपनाएंगे, उसी की रक्षा करेंगे जो मानवीय है, स्वस्थ है और आगे बढ़ने में सहायक है। जो संस्कृति इस कसौटी पर खरी नहीं उतरती उसे हम ढोने के लिए तैयार नहीं।

पुरानी पीढ़ी

जिस पीढ़ी ने अपना जीवन, संघर्षों में खोया।
संस्कार शिक्षा के बल पर,बीज प्रेम का बोया॥
रिश्तों का संसार बसाने, जिसने लोहू सींचा।
अपने बलशाली हाथों से, जिसने कोल्हू खींचा॥

जिस पीढ़ी को ज्ञात नहीं था, ऐसा भी युग आएगा।
इतनी जल्दी उस पीढ़ी से, सबका मन भर जाएगा॥
बेबश होकर अपने घर में, अलग-थलग रहने को है।
जिसने एक जमाना देखा, वह पीढ़ी ढहने को है॥

पशुधन की सेवा की जिसने, गोबर से घर को लीपा।
घर की चौखट के अंदर ही, जिसका चौमासा बीता॥
जिस पीढ़ी पर वक्त अधिक था, संसाधन से रीती थी।
सच्चे आदर्शों के बल पर, सादा जीवन जीती थी॥

उसको श्रमनिष्ठा प्यारी थी, कुल की कीरति थी प्यारी।
उसकी सेवा से दिखती थी, खेतों में फूली क्यारी॥
सूर्योदय से पहले उठकर, जिनके सैर सपाटे थे।
मर्यादा जब घटती थी तो उनके सिर झुक जाते थे॥

चरणों में उनके झुक जाओ, अंतर की आंखें खोलो।
जीवन की आपाधापी में, उनसे दो बातें बोलो॥
ध्यान रहे यह अंतिम पीढ़ी, लौट नहीं फिर आएगी।
जाते-जाते अंतिम क्षण तक, तुमको कुछ दे जाएगी॥



जगदीश शर्मा
अशोकनगर

ज़रा ऊँचाइयों से पहले

ज़रा ऊँचाइयों से पहले तुम अपने हुनर बुन लो,
हवाओं में नहीं, मिट्टी पे अपने रास्ते चुन लो।
ज़माने की अदालत में खड़े होने से पहले तुम,
कभी तन्हा स्वयं से बात कर अपना कथन सुन लो।

सफ़र आसान होता है नहीं हर मोड़ पर साथी,
कभी पत्थर, कभी काँटे, कभी मौसम रहे घाती।
अगर गिरना पड़े तो भी उसी मिट्टी से फिर उगना,
वो ही ठोकरें देंगी सफलता की नई पाती।
नहीं हर जीत मिलती है किसी जादू से पल भर में,
पसीने की इबारत को लहू की रोशनी बुन लो।
ज़रा ऊँचाइयों से पहले तुम अपने हुनर बुन लो...

दियों की उम्र क्या होगी, हवाएँ तय नहीं करतीं,
इरादों की तपिश ही राह की मुश्किल कम करती।
नहीं मिलता किसी को मान केवल शोर करने से,
सदा ख़ामोश मेहनत ही शिखर का द्वार है धरती।
किसी की छाँव में रहकर कभी सूरज नहीं मिलते,
स्वयं जलना पड़ेगा, यह हक़ीक़त भी तो सुन लो।
ज़रा ऊँचाइयों से पहले तुम अपने हुनर बुन लो...

समंदर भी झुका करता है नदियों के समर्पण पर,
वृक्ष फल से झुकें जैसे विनय के मधुर आचरण पर।
जो अपने दोष से लड़ते वही इतिहास लिखते हैं,
नहीं सम्मान मिलता है कभी केवल प्रदर्शन पर।
अगर दुनिया बदलनी है तो ख़ुद को भी बदल डालो,
हृदय के बंद दरवाजे थोड़ा-सा अभी खोलो।

ज़रा ऊँचाइयों से पहले तुम अपने हुनर बुन लो,
हवाओं में नहीं, मिट्टी पे अपने रास्ते चुन लो।
ज़माने की अदालत में खड़े होने से पहले तुम,
कभी तन्हा स्वयं से बात कर अपना कथन सुन लो।



'रूद्राणी' पूनम शर्मा
मोहाली

वंदेमातरम

वंदे मातरम सिर्फ शब्द नहीं है
ये तो वो लहू है जो बहता है
मातृ भूमि के दीवानों में
ये वो दावानल की आग है
जो जला देती है दुश्मनों की टोली को
यह सिर्फ एक शब्द नहीं है
ये वो कफ़न है जिसे
दिवानों ने बाँध रखा है अपने माथे पर
ये वो ज्वालामुखी है जो बहा ले जाता है
अपने सैलाब में दुश्मन को
ये सिर्फ शब्द नहीं है
ये कृष्ण की गीता का ज्ञान है
ये हर मंदिर से उठती तान है
ये देश भक्ति का मान है
ये हम भारतीयों की पहचान है
ये जान से भी हमको प्यारा है
ये सियाचिन की बर्फीली चोटियों पर
खडे जवान की हुंकार है
ये कश्मीर की सीमा रेखा पर
खड़े सैनिक की दहाड है
ये हम माँ-बहनों की आशा है
ये सब लोगों की ही भाषा है
ये मन से उठता आलाप है
ये हम सबका ईमान है
ये हमारा भाईचारा है
जिस पर अपना दिल हमने वारा है
उतार दिया जिन मासूमों को मौत के घाट
उनके सीने की जलती मशाल हैं
ये भारत की मिश्रित आवाज़ है
जिस पर हमें नाज़ है
वो वंदे मातरम हमारा ख़ास है ।।।



बबिता उपाध्याय
सेक्टर 3 रोहिणी दिल्ली

ऑपरेशन सिंदूर

चुप थी वादियाँ,
पहलगाम की वो दोपहर,
पर छुपे थे साए आतंक के,
लेकर नफ़रत का कहर।
बायसरन के मैदानों में,
जहाँ गूंजते थे प्रेम गीत,
वहाँ चली थीं गोलियाँ,
हुआ निर्दोषों पर वार।
निहत्थों पर चलाई बंदूकें,
शर्म भी तुमसे शरमा जाए,
कायरता की वो मिसालें,
इतिहास कभी न भुला पाए।
पर भूल गए तुम, ये भारत है,
घायल होता, पर सहता नहीं,
जो सिंदूर उजाड़ा माँओं का,
इसका बदला लेकर रहेंगे।
उठा तिरंगा सीने में जज़्बा,
"ऑपरेशन सिंदूर" जब चला,
बोले बंदूकें, गरजे सिपाही,
हर आतंकी का नाम मिट्टी धूल बना।
घाटी ने फिर देखा सूरज,
संग शांति की मुस्कान,
शहीदों का रक्त बना सिंदूर,
और चमक उठा हिंदुस्तान।



लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा (बुलंदशहर), उत्तरप्रदेश



रक्षाबंधन

भाई की कलाई सजती है,
जब राखी की डोरी बंधती है।
माथे टीका, हाथों मिठाई,
खुशियां हर घर में खिलती हैं।
रक्षाबंधन आया प्यारा,
प्यारा यह त्यौहार हमारा।
बहना लाई थाली अपनी,
राखी सजा मनभावन।
मन में सच्चे भाव रखती,
प्रेम भरा यह बंधन।
राखी बांधे, गले लगाकर,
बोले भैया हंसते-हंसते-
तेरी रक्षा वचन हमारा,
साथ निभाऊं हर पल तुम्हारा।
प्यारी बहना, तुझ से नाता,
स्नेह भरा सबसे न्यारा।
मीठी बातें, हंसी पुरानी,
फिर यादों में खो जाते।
बचपन की वह शरारतें,
सब रक्षाबंधन पर मुस्काते।
भाई बहन जैसा रिश्ता ना कोई,
बचपन जैसा प्यार ना कोई।



लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा (बुलंदशहर), उत्तरप्रदेश




कॉमिक श्रृंखला
अकड़ू जी VS झकासू जी
एपिसोड एक
पहली नोक-झोंक
मैं किसी के सामने झुकता नहीं!
ज़िंदगी झकास है... बस मुस्कुराते रहो!
गुड मॉर्निंग अंकल जी! आज तो बड़े स्मार्ट लग रहे हैं!
अंकल किसे बोला? मैं अभी भी जवान हूँ!
फिर तो डबल गुड मॉर्निंग... जवान जी!
तुम्हारा नाम क्या है?
ओहो! तो आपका नाम अकड़ू नहीं... स्टाइलू जी होना चाहिए!
पेड़ जितना फलदार होता है... उतना ही झुकता भी है!
अकड़ू जी
झकासू जी
मैं अकड़ हूँ... क्योंकि मैं किसी के सामने झुकता नहीं!
मेरा नाम है झकासू... मैं हर हाल में जिंदगी को झकास बना देता हूँ!
अगर अकड़ू जी का आत्मविश्वास और झकासू जी की मुस्कान मिल जाए, तो जिंदगी सच में झकास हो जाए!
दोस्ती?
दोस्ती ठीक है... लेकिन अकड़ मेरी कम नहीं होगी!
और मेरी झकासियत भी नहीं!
हंसिए, थोड़ा गुनगुनाइए और मुस्कुराइए
बने रहिए अकड़ू जी और झकासू जी के साथ...
रोज नए-नए किस्से, जो हंसाएंगे और गुदगुदाएंगे !
डॉ. दविंदर कौर होरा
साहित्यकार
इंदौर म.प्र

पाठक एवं लेखकों द्वारा प्राप्त
प्रतिक्रियाएँ

काव्य शैली का जुलाई अंक लोकलुभावनी ऋतु वर्षा को समर्पित एक अप्रतिम भाव प्रवाह है जो शुरुआत से आखिरी तक पाठकों को खींचकर रखता है।

सम्पादकीय में वर्षा ऋतु के महत्व को सुंदर व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आद्यन्त उपयोगी काव्य रचनाएँ इसकी पावस सरिताएँ एवं लेख झरझर झरते झरने हैं। सभी कवियों लेखकों की अद्वितीय रचनाओं हेतु बधाई।

आदरणीय रशीद अहमद शेख़ रशीद की ग़ज़ल बरबस ही चित्त को खींचने का माद्दा रखती है, ऐसी मझी हुई ग़ज़लें अब यदा कदा देखने मिलती हैं। ऋतु अग्रवाल जी के श्रावणी दोहे सावन का सुंदर चित्र खींचते हुए प्रतीत होते हैं। डॉ. पूनम विशाल जी ने बारिश में फिट रहने के जो उपाय सुझाये हैं उनसे समाज समुचित शिक्षा ग्रहण कर सकता है। चित्रावली बेहद रमणीक है। पत्रिका की सम्पूर्ण टीम को साधुवाद!

जगदीश शर्मा सहज, अशोकनगर, म.प्र.

'काव्यशैली' का जुलाई (सावन) विशेषांक सचमुच मन को आनंदित करने वाला है। आकर्षक एवं मनमोहक आवरण-पृष्ठ पाठकों का ध्यान पहली ही दृष्टि में अपनी ओर खींच लेता है। भीतर संकलित कविताएँ सावन, प्रकृति और संवेदनाओं के विविध रंगों से सजी हैं। प्रत्येक रचना अपने भाव और शिल्प से पाठक के मन को स्पर्श करती है। आदरणीया मुख्य संपादक श्रीमती शैली भगत जी तथा सम्पूर्ण संपादकीय टीम को इतने सुंदर, सुसंपादित और संग्रहणीय अंक के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। इस विशेषांक में अपनी कविता को स्थान मिलना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता और सम्मान की बात है।

डॉ. संगीता बिंदल

काव्यशैली राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का वर्षा विशेषांक अंतर्मन को भिगो देने वाला है। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में मेरी रचना प्रकाशित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ!

ब्रजेन्द्र शरण श्रीवास्तव 'मानव',
झांसी (उ.प्र.)

काव्यशैली के जुलाई अंक के प्रकाशन हेतु संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मेरी रचना "तेरा शहर डूबा है" को इस प्रतिष्ठित अंक में स्थान देने के लिए हृदय से धन्यवाद। यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और सम्मान का विषय है।

जुलाई अंक की सभी रचनाएँ अपनी संवेदनशीलता, विचार-समृद्धि और साहित्यिक सौंदर्य से पाठकों को गहराई से प्रभावित करती हैं। सभी रचनाकारों को उनकी उत्कृष्ट सृजनशीलता के लिए हार्दिक बधाई। विविध विषयों और सशक्त अभिव्यक्तियों से सुसज्जित यह अंक वास्तव में संग्रहणीय बन पड़ा है।

कामना है कि काव्यशैली इसी प्रकार साहित्य की उत्कृष्ट परंपरा को आगे बढ़ाते हुए रचनाकारों और पाठकों के बीच सृजन का सशक्त सेतु बनी रहे। सादर,

सरिका प्रीतम

घुमड़ती घटाओं, बरसती बूंदें, इठलाती नदी, बलखाती सड़क, झूमते फूल और नाचते पत्तों के बीच लैंप पोस्ट के मद्धम रौशनी में आह्लादित युवती वाला काव्यशैली का बारिश पर केंद्रित जुलाई 2026 अंक का मुखपृष्ठ सिर्फ आंखों को सुकून नहीं देता, प्राण को भी भींगो देता है। इस गीले अहसास के लिए आपको धन्यवाद।

धन्यवाद इस अंक में मेरी ग़ज़ल 'बहुत दिनों के बाद ये पानी' को स्थान देने के लिए भी।

और धन्यवाद इसके लिए भी एक साथ बारिश पर इतनी नहा देने वाली रचनाएं पढ़ने को मिलीं। सारे रचनाकारों का आभार।

काव्यशैली का हर अंक विशेषांक बन कर संग्रहणीय बन रहा है। यह सिलसिला चलता रहे, इसी आकांक्षा के साथ, अगले अंक की प्रतीक्षा में ---

सरोज कुमार वर्मा,
मुजफ्फरपुर, बिहार

काव्यशैली के जुलाई 2026, वर्षा विशेषाँक में सभी रचनाकारों की रचनाओं ने वर्षा की रिमझिम फुहारों से मन को भीतर तक भिगो कर रख दिया।

आज प्रत्यक्ष में वर्षा एवं उत्कृष्ट रचनाओं का मिलन अतुलनीय है। आदरणीय सम्पादक मँडल के दिशा निर्देश एवं प्रयास वास्तव में अत्यन्त सराहनीय हैं।

साधना शर्मा


काव्यशैली
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
काव्यशैली
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
विशेषांक.....
15th August
महिला विशेष

DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

साहित्य, कला, संस्कृति को समर्पित
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े

प्रतिमाह दिल्ली से प्रकाशित

- कविता, गीत, ग़ज़ल, काव्य की विभिन विधाओं की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन
- शिक्षा, संस्कृति, कला आधारित कहानियों, लेख - आलेख
- 'बोलती किताबें' रीडर्स क्लब से बच्चों और बड़ों को जोड़ कर उनमें पाठन के प्रति रुचि जगाना
- वर्ष भर आयोजित साहित्यिक कार्यशाला, कार्यक्रमों में सहभागिता का अवसर
- साहित्य जगत में पहचान बनाने का अवसर
- किसी विशेष व्यक्तित्व पर विशेषांक प्रकाशन की सुविधा
- हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े



आइए शब्दों की इस पावन यात्रा में
साथ चले, साथ बढ़े

SUBSCRIPTION DETAIL

1500/-
वार्षिक

पत्रिका से जुड़ने एवं अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :
9425478866
+917982407065
ईमेल : kavyashaily049@gmail.com

काव्यशैली - जहाँ शब्दों में संस्कार, विचारों में विस्तार और भावों में सुंदरता है।

ग़ज़ल



हरजीत सिंह 'जीत'
इंदौर

चाहतों का है मन में जाल बहुत
बिगड़ी इससे तो मन कि चाल बहुत।

कुछ भी होता नहीं असर इस पर
हो गई मन की मोटी खाल बहुत।

अब की बारिश में भीगे ये तन मन
ख़ुश्क गुज़रा है पिछला साल बहुत।

ज़िंदगी को जवाब कैसे दूं
रोज़ करती है ये सवाल बहुत ।

इश्क़ कैसे हुआ बताएं क्या
कहना कुछ इस पे है मुहाल बहुत।

हम से लड़कर तो ये ज़माना भी
इक ज़माने से है निढाल बहुत ।

'जीत' इस ख़ुदग़रज़ इस ज़माने में
मिलना मुश्किल है हम-ख़याल बहुत।

सदस्यगण


'रुद्राणी' पूनम शर्मा


कृष्णा मणि श्री


कमला सिंह 'ज़ीनत'


जय किशन 'जय'


सावित्री मलिक


हुमा ख़ातून


तूलिका सेठ


सुनीता भारल अनुश्री


पुष्पा जोशी


पुष्टि अग्रवाल


साधना अग्रवाल 'साधिका'


पूजा सक्सेना


लक्ष्मी कानोडिया


अजय वर्मा साथी


सोनिया अक्स


सारिका प्रीतम


डॉ. रश्मि गंगवानी


ख़ुशबू जैन

E-mail : kavyashaily049@gmail.com Mob. : 79824 07065 9425478866

काव्यशैली

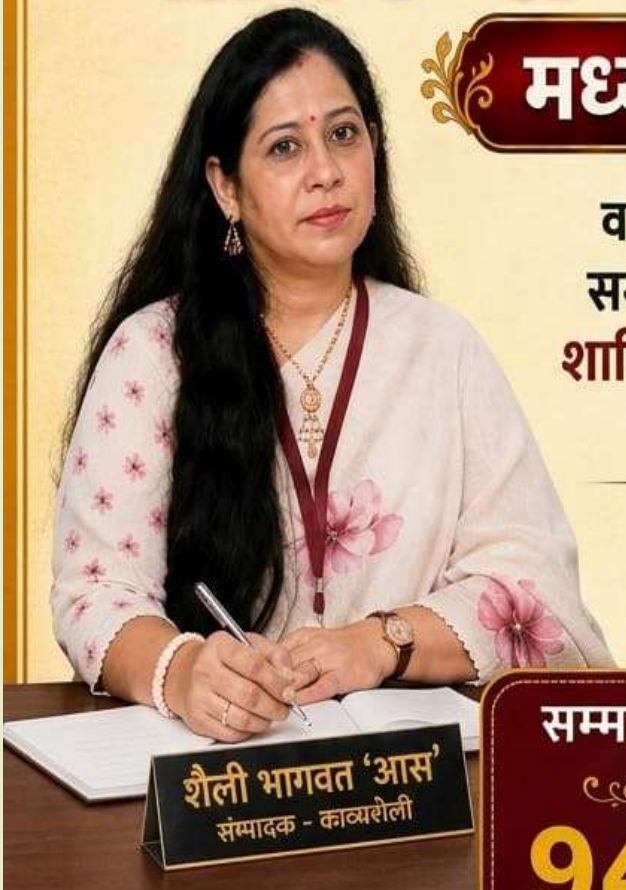
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

अगला

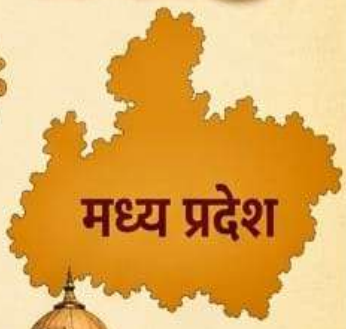
काव्यशैली

वार्षिक सम्मान समारोह

मध्य प्रदेश में



वार्षिक काव्यशैली
सम्मान समारोह में
शामिल होने के लिए
सम्पर्क करें





सम्मान समारोह में शामिल होने के लिए
सम्पर्क करें :-

94254 78866

शब्दों की इस पावन यात्रा में सब साथ चले - साथ बढ़े